चन्दामामा
जुलाई १९७६
1 Re

# "आपात् स्थिति-अनुशासन पर्व"

—आचार्य विनोबा भावे

# नई उपलब्धियां

## राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार

- जरूरी चीजों की कीमतों में गिरावट।
- उत्पादन में वृद्धि। बिजली सप्लाई में बढ़ोतरी।
- औद्योगिक सम्बन्धों में सुधार।
- हड़तालें, तालाबन्दी और 'बन्द' खत्म।
- अपराध, हिंसा और दूसरी समाज-विरोधी गतिविधियों में उल्लेखनीय कमी।
- कार्यालयों में समय की पाबन्दी और कार्यकुशलता।
- लोगों में काम के लिए अधिक उत्साह।
- अप्रैल, 1974 में मुद्रा स्फीति की दर 30.1% थी, जो जुलाई, 1975 में घटकर – 2.1% हो गई।
- किसानों को खेती की उपज बढ़ाने के लिए बेहतर साधन तथा कर्ज की अधिक सुविधाएं।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार
- सभी राज्यों को मिट्टी के तेल की पर्याप्त सप्लाई।
- कन्ट्रोल के कपड़े का 1974 में उत्पादन 10 करोड़ वर्ग मीटर और इस साल 16 करोड़ वर्ग मीटर।
- उपभोक्ताओं को हर साल खाना पकाने की गैस के 2 लाख 50 हजार नए कनैक्शन।
- 117 आवश्यक दवाइयों के उत्पादन में वृद्धि।
- दूर-दराज और पहाड़ी इलाकों में कम कीमत पर सीमेंट की सप्लाई।
- मध्यम आय वर्ग को टैक्स में राहत।
- जनता में अनुशासन का एक नया दौर।

## श्रीमती इन्दिरा गांधी के 20 सूत्री कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दीजिए

**मेहनत से काम कीजिए, उत्पादन बढ़ाइए और अनुशासन बनाए रखिए**

davp 75/216

LINTAS/RB/CAL-1-CM-H1
बचाइये 3 रुपये
'चन्दामामा' के एक साल के चन्दे पर
-नई रिचब्रू चाय खरीदकर
CHANDAMAMA
NEW!
LIPTON RICHBRU
भारत के लाखों घरों में चन्दामामा बड़ी दिलचस्पी से पढ़ी जाती है—हर महीने, माहवार-मास! अब रिचब्रू की ओर से प्रस्तुत है यह विशेष उपहार जो आपको सचमुच खुश करेगा। बारह महीनों तक चन्दामामा आपके घर में पहुँचाई जायेगी। इस उपहार से आपके पैसे भी बच जायेंगे! साधारण तौर पर आपको चन्दामामा की बारह कापियों, यानी एक साल के लिये, 12 रुपये भरने पड़ते हैं। लेकिन इस उपहार के ज़रिये आपको सिर्फ 9 रुपये ही देने पड़ेंगे। और इस प्रकार आपको 3 रुपये की बचत होगी। इस उपहार का तुरन्त फायदा उठाइये! 500 ग्राम और 250 ग्राम रिचब्रू के पैकेटों पर छपे हुए कूपन को भर कर जल्द डाक द्वारा भेजिये। यह विशेष उपहार वाली नई रिचब्रू चाय आज ही खरीदिये—स्टॉक समाप्त होने से पहले। और हाँ, चन्दामामा 12 भारतीय भाषाओं में छपती है। आप कोई भी भाषा में मंगवा सकते हैं।
यह उपहार 30 सितम्बर तक दिया जायेगा!

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए ५०० मज़ेदार पुरस्कार!
इसके अलावा भी अन्य शानदार पुरस्कार
जीतने का सुअवसर!
खाली जगह की संख्या बताओ
32 48 26
13 16 24
96 ? 64
Cadbury's MILK CHOCOLATE GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले ५०० सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा। अतः तुम्हें अपने गिफ्ट चेक पर ४०० रुपये का एक और शानदार इनाम जीतने का मौका मिलेगा— भाग्यशाली लोगों के लिए अतिरिक्त लाभ!
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मजा" डिपार्टमेंट बी-२०
पोस्ट बॉक्स नं. ५६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
१९ अगस्त १९७९
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-39 HN

उन्हें भी खूबसूरत
और मनोरम स्नानगृह
में नहाने दीजिये
बात ठीक है न ?
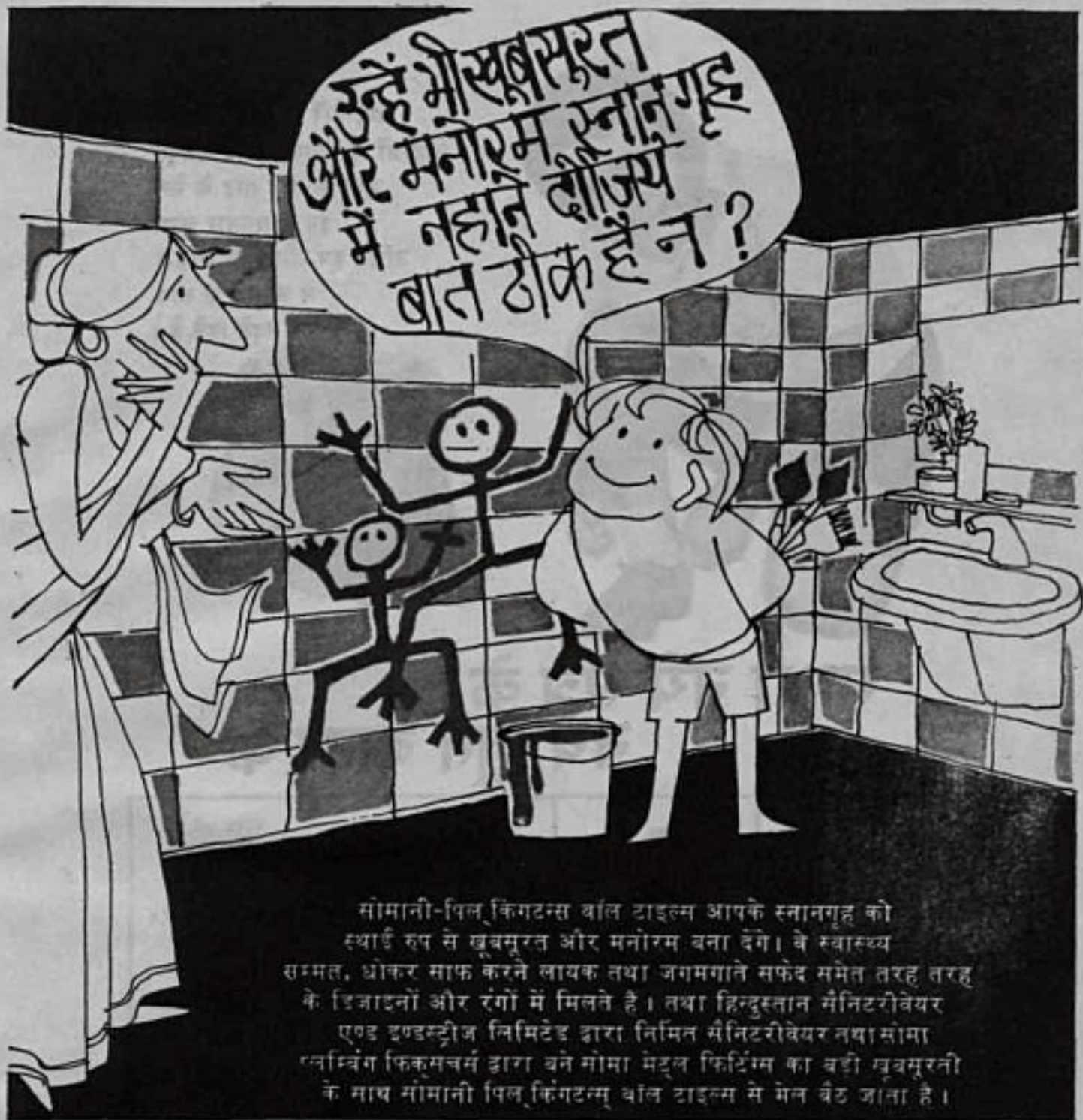
सोमानी-पिल्किंगटन्स वॉल टाइल्स आपके स्नानगृह को स्थाई रूप से खूबसूरत और मनोरम बना देंगे। वे स्वास्थ्य सम्मत, धोकर साफ करने लायक तथा जगमगाते सफेद समेत तरह तरह के डिज़ाइनों और रंगों में मिलते है। तथा हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा निर्मित सैनिटरीवेयर तथा सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स द्वारा बने सोमा मेटल फिटिंग्स का बड़ी खूबसूरती के साथ सोमानी पिल्किंगटन्स वॉल टाइल्स से मेल बैठ जाता है।

खूबसूरत स्नानगृह का प्रतीक

सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड

हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड

२, रेड क्रास प्लेस, कलकत्ता-७०००१

सचित्र रंगीन पुस्तिका—
'ए गाइड टू ब्यूटिफुल बाथरूम्स' के लिए लिखिये और अपने प्रयोजन के अनुसार अपना स्नानगृह सजा लीजिये।

naa. SPL-7524 HIN

नन्हे पैरों के लिए बाटा के
विशेषज्ञों ने तैयार किये हैं मजबूत
जूतों के तरह तरह के मेल
इन में सुकुमार चरण
उचित रूप और सही आकार
में आराम के साथ
बढ़ते रहते हैं।

# साथी नये सत्र के नये जूते बाटा के

बेफाईन्डर्स १७
साईज ६-११
१२-१, २-५
रु० २४.६५
२७.६५, ३२.६५

मिली २४
साईज ५-१०
रु० १४ ६५

कमिट ७३
साईज ६-११½
१२-१½, २-५
रु० ३३.६५
३६.६५, ३०.६५

बेफाईन्डर्स ४३
साईज ६-११
१२-१ २-५
रु० २४.६५
२८-६५, ३४ ६५

कोमल पावों के स्वस्थ विकास
के लिए बनें जूते

**Bata**

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा 'सन्यासी का बलिदान' से हमें यह विदित होता है कि अनेक प्रकार के दृष्टिकोण रखनेवाले लोग होते हैं। जब परस्पर संबंध न रखनेवाले दृष्टिकोणों के बीच शत्रुता पैदा हो जाती है, तब व्यावहारिक दृष्टिकोण सफल होता है। लोक धर्म के विरुद्ध अपनाया जानेवाला दृष्टिकोण असफल होता है। जीवन में अयोग्य व्यक्ति कैसे लाभान्वित होते हैं, यह सत्य हमें 'चापलूसी' नामक कहानी के द्वारा विदित होता है।

वर्ष : २८ जुलाई १९७६ अंक : ११

# मित्र-संप्राप्ति

[ २६ ]

उस दिन से लेकर कौआ और चूहा प्रति दिन मिलने और चर्चा करते हुए प्रसन्नता पूर्वक अपने दिन बिताने लगे। वे परस्पर सहयोग भी करने लगे। यज्ञ कुंड के पास बचे माँस तथा चावल के दाने लाकर कौआ चूहे को दिया करता। इसी प्रकार चूहा भी रात के वक्त चावल तथा खाने के और पदार्थों का जो संग्रह करता, उन्हें लाकर कौए को खिलाता। इस तरह दोनों के बीच परस्पर आदान-प्रदान के द्वारा मैत्री दृढ़तर होती गई। लेन-देन का व्यवहार न हो तो मैत्री स्थापित नहीं हो सकती है न? देवता भी मनौतियाँ पाकर भक्तों की कामनाओं की पूर्ति करते हैं। जब तक देने का कार्य चालू रहता है, तब तक ममता भी बनी रहती है। माँ के यहाँ दूध के समाप्त होते ही बछड़ा उसे छोड़ देता है। पर देने का क्रम चालू रखने से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। पशु जाति में भी देने का गुण अपने पेट की तृप्ति की अपेक्षा प्रधान होता है। भैंस अपने बछड़े के होते हुए भी अपने दूध को दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति को भी दे देता है। इसी प्रकार सहज शत्रु होते हुए भी चूहा और कौआ दृढ़ मैत्री में बंधे खुशी के साथ चर्चाएँ करते रहें।

एक दिन कौआ चूहे के पास पहुँचा, आँखों में आँसू भरकर गदगद् स्वर में बोला—"हे मित्र हिरण्यक! अब हम एक दूसरे से दूर होने जा रहे हैं! मुझे इस देश को छोड़ दूसरे देश में जाना पड़ रहा है।"

"ऐसा क्यों?" हिरण्यक ने पूछा।

"इस देश में भयंकर रूप से पानी का अकाल आ पड़ा। लोग प्यास के मारे मरे

अंतिम पृष्ठ का चित्र

जा रहे हैं! यज्ञ सब बंद हो गये हैं। मुझे उन्हीं यज्ञों के कारण अच्छा खाना मिलता रहा। लोग भूख के मारे परेशान हो सभी प्रकार के पक्षियों को पकड़कर खाते जा रहे हैं। चाहे जिस किसी भी घर में देखो फँसाये गये पक्षी ही दिखाई दे रहे हैं। उन्हें देखने पर मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है। मैं भी पकड़ा गया था, पर किसी तरह बच निकला। इसीलिए मैंने इस देश को छोड़ने का निश्चय कर लिया है।" कौए ने कहा।

"तुम कहाँ जाना चाहते हो?" चूहे ने पूछा।

"दक्षिण देश में एक भयंकर जंगल के बीच एक बहुत बड़ा सरोवर है। वहाँ पर तुमसे भी बढ़कर मेरे एक निकटतम मित्र मंथरक नामक एक कछुआ है! वह मुझे मछली का माँस देगा। उसे खाकर उसके साथ गोष्ठियाँ करते सुखपूर्वक अपने दिन बिताऊँगा। यहाँ रहकर मैं पक्षी जाति के बंदी होते व मरते देख न पाऊँगा। तुम पूछ सकते हो कि उतनी दूर की यात्रा कठिनाइयों से भरी है, इसलिए क्या वहाँ पर जाना बांछनीय है? लेकिन समर्थ व्यक्तियों के लिए असंभव कार्य कोई नहीं होता। संकल्प हो तो असाध्य वस्तु कोई नहीं होती। ज्ञानी के लिए पराया देश, और साधू प्रकृतिवाले के लिए विजातीय

कोई नहीं होता! इसलिए जब देश अकाल का शिकार होता है, फसलें सूख जाती हैं और अपने परिवार तबाह होते हैं, तब उन्हें देखे बिना दूर चले जानेवाले ही धन्य होते हैं।" कौए ने कहा।

"तब तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। यहाँ पर रहना मेरे लिए भी तो हितकर नहीं है?" चूहे ने कहा।

"क्यों? किसलिए?" कौए ने पूछा।

"वह तो एक बड़ी रामकहानी है। हम लोग जब सरोवर के निकट पहुँचेंगे, तब मैं विस्तार के साथ सुनाऊँगा।" चूहे ने जवाब दिया। "मैं तो आसमान में उड़ने वाला पक्षी हूँ। तुम जमीन से लगकर

निवास करनेवाले प्राणी हो! हम दोनों साथ-साथ कैसे यात्रा कर सकते हैं?" कौए ने अपनी शंका प्रकट की।

"अगर तुम मेरे प्राण बचाना चाहते हो तो तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठाकर सरोवर तक उड़ चलो। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है।" चूहे ने कहा।

"मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ यह काम कर सकता हूँ। यह तो मेरा भाग्य ही माना जाएगा। दो मित्रों के साथ मिलकर सरोवर के पास गोष्ठियाँ करने में मुझे बड़ा आनंद आएगा।" कौए ने कहा।

इसके बाद हिरण्यक कौए की पीठ पर चढ़ बैठा। कौआ बड़ी आसानी से उड़कर सरोवर के पास पहुँचा।

मंथरक बड़ा ही सतर्क रहनेवाला प्राणी है। उसने देखा कि कौआ चूहे को पीठ पर चढ़वाकर चला आ रहा है, तब उसने सोचा कि यह कोई विचित्र कौए जैसा है। मुझे तो इससे बचना है। यों सोचकर वह पानी में डूब गया।

कौए ने चूहे को एक पेड़ के नीचे के सुरंग के पास उतार दिया, तब पेड़ की डाल पर बैठकर बोला—"हे मंथरक! तुम शीघ्र आओ! मैं तुम्हारा मित्र लघुपतनक हूँ। मैं शरणागत बनकर तुम्हारे यहाँ आया हूँ। तुम शीघ्र आकर मेरे साथ गले लगाओ।"

कछुआ आनंद-बाष्प गिराते धड़कनेवाले दिल को लेकर किनारे पर आया और बोला—"हे मित्र! मुझ से गले मिलो! हम लोगों के मिले काफी दिन हो गये हैं और तुम भी काफी बदल गये हो, इस कारण मैं तुम्हें शीघ्र पहचान न पाया, इसीलिए पानी में जा छिपा।"

कौआ पेड़ से नीचे उतरा और उसने कछुए के साथ आलिंगन किया।

वे दोनों बहुत दिन बाद मिले थे, इसलिए इस बीच के अपने अनुभव सुनाने लगे। तब चूहे ने आकर कछुए को साष्टांग प्रणाम किया और कौए के निकट जाकर बैठ गया।

# माया सरोवर

[ ६ ]

*[ जयशील तथा सिद्ध साधक राजा के नौकर के साथ जंगल में चले गये। वहां पर एक बरगद के नीचे एक बहेलिये तथा मंत्र-तंत्र करनेवाले ओझा को भी उन लोगों ने देखा। बहेलिये ने वह कंटीली झाड़ी उन्हें दिखाई, जहां पर उसे टूटी तलवार और मोतियों की माला मिली थी। उसी झाड़ी में सिद्ध साधक को एक ताड़-पत्रवाला ग्रंथ मिला। बाद- ]*

सिद्ध साधक झाड़ी में प्राप्त ताड़-पत्र-ग्रंथ को देख जोश में आ गया। इसे देख जयशील को आश्चर्य हुआ। मगर सिद्ध साधक ने एक-एक ताड़ पत्र को उलटकर देखते हुए कहा-"यह भी कैसी भाषा है! किस दुनिया के लोग यह भाषा पढ़ते हैं? वास्तव में ये पत्र भी ताड़ पत्रों से अथवा भूर्ज पत्रों से तैयार किये गये नहीं हैं। ऐसा लगता है कि मोटे मोटे कमल-पत्रों को काटकर तैयार किये गये हैं।"

"सिद्ध साधक! क्या उन पत्रों पर लिखी हुई भाषा को तुम पढ़ नहीं सकते?" जयशील ने पूछा।

सिद्ध साधक ने नकारात्मक ढंग से सर हिलाकर कहा-"यह कोई देव भाषा या राक्षस भाषा हो सकती है! हम उनकी मदद से ही इसे पढ़ सकते हैं। या हो

सकना है कि राजा कनकाक्ष के दरबारी पंडितों में से कोई जानता हो!"

जयशील ने साधक के हाथ से ताड़-पत्रोंवाले ग्रंथ को लेकर इधर-उधर पलटकर देखा और कहा–"बहेलिये के द्वारा कहे जानेवाले दो पैरोंवाला मगर मच्छ ही इसे यहाँ पर छोड़ गया होगा! लेकिन यह बात सच है कि युवराजा तथा युवरानी का पता लगाने में यह ग्रंथ बिलकुल सहायक सिद्ध न होगा!" इन शब्दों के साथ जयशील ने उस ग्रंथ को निकट की झाड़ियों में फेंक दिया।

सिद्ध साधक ज़ोर से चिल्ला पड़ा–"जयशील, तुमने यह क्या किया? उस ग्रंथ में कोई मंत्र होंगे! शायद इनकी मदद से हम महाकाल को अपने वश में कर सकते हैं!" इसके बाद वह झाड़ियों के पास दौड़ पड़ा, उस ग्रंथ को लेकर पुनः जयशील के पास लौट आया।

जयशील ने क्रोध पूर्ण स्वर में पूछा–"सिद्ध साधक, तुम यह बताओ कि हम लोग यहाँ पर महाकाल को वश में करने आये हैं, या राजा कनकाक्ष के बच्चों का पता लगाने के लिए?"

यह सवाल सुनकर सिद्ध साधक तत्काल सहम गया और धीमी आवाज़ में बोला–"जयशील, तुम नाराज़ मत होओ! मैं इस बहेलिये के ज़रिये दो पैरोंवाले मगर-मच्छ का पूरा पता लगा लेता हूँ। शायद वही युवराजा और युवरानी को हड़प कर ले गया होगा।"

"यह कोई पागल मालूम होता है। भला, तुम्हीं बताओ, कहीं दो पैरोंवाला मगर-मच्छ भी होता है? तुम कैसे उसकी बातों में आ गये हो?" जयशील ने खीझकर कहा।

सिद्ध साधक बहेलिये के कंधे पर थपकी देते हुए बोला–"अबे, सुनो! तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। दो पैरोंवाला मगरमच्छ यहाँ पर क्यों आया? उसने तुम से क्या क्या पूछा?"

बहेलिया डर के मारे चारों ओर नजर दौड़ाकर बोला–"साहब! उसका मुझ से सवाल पूछना और उसके सवाल का जवाब देकर मेरा जिंदा रहना कैसे संभव है? मैं कंटीली झाड़ी में गिरे जंगली मृग को उठाने के लिए अपने घुटनों पर झुका ही था, तभी मेरे पीछे कोई भयंकर आवाज हुई। मैंने डर के मारे सर घुमाकर देखा, और सारा बदन मगर-मच्छ की आकृति में लंबा कद कोई प्राणी दिखाई दिया। उसी क्षण मैं चीखकर जमीन पर गिर गया। इसके बाद मैं नहीं जानता कि क्या हुआ है?"

"तुमने जंगली मृग पर जो बाण चलाया, उसका क्या हुआ?" जयशील ने पूछा।

"उसे पहाड़ी देवता उठा ले गया होगा! बड़े सवेरे मृग को मारकर इसने बड़ा ही अपराध किया है। इसीलिए उस पहाड़ी देवी ने इसको दण्ड दिया है!" ओझा ने दांत मींचते हुए कहा।

जयशील ने उसकी ओर क्रोधभरी दृष्टि दौड़ाई और सिद्ध साधक से कहा–"लगता है कि यहां पर सब मूर्ख जमा हुए हैं। अब हमें क्या करना होगा? राजा को सूचित करने के लिए हमारे पास कोई भी शुभ समाचार नहीं है, इसलिए हमारा तत्काल राजधानी को लौट जाना अर्थ हीन

ही होगा! हम आसपास के इन पहाड़ों तथा घाटियों में घूमकर उस दुष्ट का पता लगाने का प्रयत्न करेंगे।"

"जयशील! यह तो सबसे बढ़िया उपाय है!" इन शब्दों के साथ सिद्ध साधक ने जयशील की प्रशंसा की, तब ताड़ पत्रवाले ग्रंथ के दो तीन पत्रों को उलट-पलट कर बोला–"जयशील! यदि इस ग्रंथ को खोनेवाला व्यक्ति ही युवराजा तथा युवरानी का अपहरण कर ले गया हो तो वह निश्चय ही राक्षस, किन्नर अथवा गंधर्व जाति का व्यक्ति होगा!"

"होने दो, साधक! उन लोगों को मैं अपनी तलवार के बल पर तथा तुम

अपने मंत्र से पराजित कर युवराजा और युवरानी को मुक्त करके लायेंगे और राजा कनकाक्ष के हाथ सौंप देंगे ।" जयशील ने सुझाया ।

इसके बाद दोनों निकट के पहाड़ों की ओर चल पड़े । तभी राजधानी से आये हुए राजा के नौकर ने उनसे पूछा– "महाशय ! मुझे बताइये, मैं राजा से क्या निवेदन करूँ ?"

जयशील जवाब देने को था, तभी सिद्ध साधक बीच में ही बोल पड़ा–"सुनो, राजा को यह शुभ समाचार दो कि बरगद के पास जहाँ से युवराजा तथा युवरानी का अपहरण हो गया, एक महान ग्रंथ उपलब्ध हुआ है! उसकी मदद से युवरानी तथा युवराजा का अपहरण करनेवाले दुष्टों का संहार करके उन्हें सुरक्षित ले आयेंगे ।"

ये बातें सुन जयशील मन ही मन हँस पड़ा । तब दोनों घने वृक्षों से भरे पहाड़ की ओर चल पड़े । उस समय वहाँ से पाँच कोस की दूरी पर पहाड़ी तलहटी में स्थित एक छोटे से गाँव में सारे गाँव के लोग इकट्ठे हो इस बात की चर्चा कर रहे थे कि अब इस संकट से कैसे बचें? वे सब भयभीत प्रतीत हो रहे थे ।

इस स्थिति का कारण था कि उसी दिन प्रातःकाल गाँव से दूरी पर स्थित ज्वार के खेतों में एक घटना हो गई थी । उन खेतों में एक मचान था । उस मचान पर बैठे चौदह साल का एक किसान का लड़का ज्वार के खेतों का पहरा दे रहा था । तभी उसने देखा कि दूर से एक हाथी खेतों की ओर तेज़ी के साथ बढ़ा चला आ रहा है । वह जानता था कि गुलेल की मार से उसे भगाना नामुमकिन है । लेकिन यदि वह खेत में घुस आया तो पंद्रह मिनट में एक एकड़ की फ़सल का सर्वनाश कर बैठेगा ।

किसान का लड़का अपनी आयु से कहीं साहसी था । पहले उसने सोचा कि मचान से उतरकर गाँव में भाग जाय और

यह खबर सारे गांव को दे। लेकिन उसके मन में अचानक यह बात सूझी कि गुलेल से एक-दो बार पत्थरों का प्रयोग करे तो शायद हाथी घबराकर जंगल में भाग जाय!

इस विचार के आते ही किसान के लड़के ने गुलेल में एक नुकीला पत्थर रखकर हाथी की ओर निशाना लगाकर फेंक दिया। उसका निशाना अचूक निकला, पत्थर हाथी में जा लगा। मगर चोट खाकर हाथी ने चीत्कार नहीं किया, बल्कि एक विचित्र आकृति हाथी पर उठ बैठी और हुंकार कर उठी—"अरे, यह कौन है? किसने यह पत्थर फेंका? मुझे तुम समझते ही क्या हो?"

उस हुंकार को सुनने पर किसान का लड़का भयभीत हो उठा। वह थर-थर कांप उठा; मचान से उतरकर वह भागना चाहता था, किंतु उसके हाथ-पैरों ने उसका साथ नहीं दिया, इसलिए वह मचान पर ही अविचल खड़ा रह गया।

एक दो पल के अंदर हाथी मचान के निकट आया। वह हाथी साधारण हाथी जैसा न था। उसका सारा शरीर मछलियों के शरीर की आकृति में था। उस पर बैठा हुआ व्यक्ति मगर-मच्छ के सर की आकृति का शिरस्त्राण पहने हुए था।

उसके शरीर पर मगर-मच्छ का चमड़ा ढका हुआ था।

वह विकृति आकृतिवाला किसान के लड़के के निकट पहुंचा, अभय प्रदान करनेवाले जैसे हाथ उठाकर बोला—"अरे, तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं, मेरे कहे अनुसार करो! तुम गांव में जाकर मेरे वास्ते बढ़िया खाना लेते आओ, साथ ही यदि तुम्हारे गांव में कोई अच्छा वैद्य हो तो बुला लाओ! यदि वह शल्य चिकित्सा करना जानता हो तो और अच्छा होगा! देखो, बगल में धसकर टूटी हुई तलवार को सावधानी के साथ बाहर निकालकर मेरे प्राणों की रक्षा करनी है।"

किसान का लड़का थर थर कांपते हुए विकृत आकृतिवाले की सारी बातें सुनता रहा। मगर मचान से उतरने की उसकी हिम्मत न हुई। इसे भांपकर विकृत आकृतिवाला आगे बढ़ा, किसान के लड़के की कमर पकड़कर ऊपर उठाया, पहले उसे हाथी पर उतारा, तब उसके दोनों हाथ पकड़कर नीचे सरका दिया।

किसान के लड़के के दोनों पैर जब जमीन पर टिक गये, तब उसमें एक सौ हाथियों की ताक़त आ गई। वह इस तरह चिल्ला उठा, मानो काल के दूतों की पकड़ में से निकल आया हो, तब आँधी की भांति तेजी के साथ ज्वार के खेतों में से होकर दौड़ पड़ा। थोड़ी ही देर में वह अपने गांव पहुंच गया।

उस वक्त गांव के बीच स्थित नीम के पेड़ के नीचे चौपाल पर ग्रामवासी बैठे बाताखानी कर रहे थे। हांफते हुए अपनी ओर बढ़नेवाले किसान के लड़के को देख उन लोगों ने सोचा कि शायद जंगली सुअर या हिरणों की झुंड ने ज्वार के खेतों पर हमला कर दिया होगा! उन में से कुछ लोगों ने पूछा–"अबे, क्या हुआ है? दौड़ते क्यों हो?"

लड़का रुक गया। हांपते हुए उसने सारी कहानी सुनाई। पर गांव के किसी भी व्यक्ति को उसकी बातों पर विश्वास न हुआ। कुछ लोगों ने यहां तक सोचा कि लड़के का मतिभ्रमण हो गया होगा! उस वक्त वहां पर गणाचारी आ धमका। उसने सारा समाचार जानकर कहा– "किसान के लड़के ने जो बात बताई, उसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है, जब ग्रामदेवी मेरे भीतर प्रवेश करती है, तब मैं इस प्रकार के जलहाथियों तथा मगरमच्छवाले मनुष्यों को ही नहीं, अपितु दो सरवाले सिंहों तथा दस सिरवाले विचित्र मनुष्यों को भी देखा करता हूं।"

"तो तुम्हीं बताओ, अब हम क्या करना होगा? राक्षस जाति के उस

व्यक्ति ने हम सब को मार डालने का शायद कोई षड़यंत्र रचा हो!" गांव के मुखिया ने अपना संदेह प्रकट किया।

फिर क्या था, सबने वाद-विवाद करना शुरू किया। इस पर भीड़ में से एक ने ग्राम वैद्य चरकाचारी को दिखाते हुए कहा—"सुनते हैं कि उस दुष्ट के शरीर में कोई तलवार धंसी हुई है। वह भोजन के साथ इलाज भी कराना चाहता है। अगर हम चरकाचारी को अपने साथ ले जायेंगे तो ज्यादा उचित होगा।"

चरकाचारी डर के मारे कांपते हुए बोला—"उस विकृत आकृतिवाले राक्षस का मैं इलाज करूं? यह काम तो शस्त्र-चिकित्सा जाननेवाला ही कर सकता है। हमारे नाई वीरनारायण को बुलवा लीजिए! वह राक्षस के शरीर से तलवार को बाहर निकाल लेगा, तब जाकर मैं घाव से खून के बहने से रोककर दवा दूंगा और उसे बचा लूंगा।"

उसी समय एक-दो आदमी दौड़ पड़े और थोड़ी ही देर में वीरनारायण को ले आये। उसने सारी कहानी सुनकर चिल्लाकर कहा—"क्या आप लोग यह समझते हैं कि मैं राक्षस के शरीर का स्पर्श करके तलवार निकालने की ताकत रखता हूं?"

"हम क्या जानें, तुम ताकत रखते हो, या नहीं...अब देरी ही क्यों? सब लोग चलो। हां, यह अच्छा होगा, साथ में हथियार लेते जाओ। लड़के ने जो कुछ कहा, उसकी सचाई का पता ज्वार के खेतों के पास ही लग सकता है!" गांव के मुखिया ने कहा।

इसके बाद सभी लोग दल बांध कर लाठी, तलवार और कुल्हाड़ियां लेकर राक्षस की ओर बढ़े, इसे देख हाथी पर स्थित विकृत आकृतिवाले ने हाथी को ललकारा। हाथी सूंड उठाये चीत्कार करते गांववालों की ओर बढ़ा।

(और है)

# सन्यासी का बलिदान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया ।

पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा– "राजन, तुम भूल से भी सही, दुष्ट की सहायता न करो । चोर की सहायता करके सन्यासी ने अपने प्राण गंवाये हैं । श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें उस सन्यासी की कहानी सुनाता हूँ, सुनो ।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में एक सन्यासी एक शहर में पहुँचा और शहर के छोर पर स्थित एक मंदिर में ठहर गया । लोग उस सन्यासी को देखने गये । सबने अपनी तक़लीफ़ सन्यासी को सुनाई । सन्यासी ने कई लोगों की तक़लीफ़ों को दूर करने का उपाय बताया । थोड़े ही दिनों में सन्यासी का यश सारे शहर में फैल गया ।

## बेताल कथाएँ

दूसरे दिन सवेरे डाकू सन्यासी के पास पहुंचा और उसके आगे थोड़ा धन रखकर बोला–"महात्मा, रात को मैंने जो संकल्प किया था, वह आपकी कृपा से सफल हुआ, लीजिए, यह धन आप का हिस्सा रहा।" सन्यासी ने उस धन को लेकर गरीबों में बांट दिया।

थोड़े दिन बाद वह डाकू फिर सन्यासी के पास पहुंचा, फिर बोला–"आज रात को मैंने एक संकल्प किया है, उसके लिए कोई उचित समय बता दीजिए!" सन्यासी ने सोचकर इस बार भी कोई समय बता दिया।

एक दिन संध्या के समय एक डाकू सन्यासी के पास पहुंचा और बोला–"महात्मन, आज रात को एक खास काम करने का मैंने संकल्प किया है, उस कार्य के लिए उचित समय बतायेंगे तो उससे प्राप्त होनेवाले फल में से आधा आप को समर्पित करूंगा।" इन शब्दों के साथ डाकू सन्यासी के पैरों पर गिर पड़ा।

सन्यासी थोड़ी देर सोचता रहा, तब अमुक समय में कार्य शुरू करने की बात डाकू को बताई। सन्यासी के बताये समय पर डाकू ने उस रात को एक धनी के घर में घुसकर धन की चोरी की। उसे इस कार्य में पूरी सफलता मिली।

ठीक उसी समय पर डाकू राजा के खजाने में पहुंचा, काफी धन चुराकर उसमें से आधा हिस्सा सन्यासी को दिया।

सन्यासी ने वह धन भिखारियों में बांट दिया। राजा के खजाने में जिस दिन चोरी हुई थी, उसके दूसरे ही दिन भिखारियों के हाथों में अशर्फ़ियां देख राजभटों ने पता लगाया कि वे अशर्फ़ियां उन्हें कहां से प्राप्त हुई हैं, तब राजा को यह समाचार दिया।

राजा ने सन्यासी को बुलवाकर पूछा–"क्या तुमने भिखारियों में अशर्फ़ियां बांट दी हैं?"

सन्यासी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम सन्यासी का वेष धरकर चोरियां करते हो न?" राजा ने पूछा। पर सन्यासी ने इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया।

"इसका सर काट डालो।" राजा ने अपने भटों को आदेश दिया। भटों ने उसी समय सन्यासी का सिर काट डाला।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन, राजा ने सन्यासी को मृत्यु दण्ड दिया, क्या यह अन्याय नहीं है? राजा के सवालों का सही समाधान न देकर सन्यासी ने अपने प्राण क्यों गंवा दिये? क्या इसलिए कि वह भी चोरी करने में सहायक बना? या उसे चोरी के माल में हिस्सा देनेवाले चोर को बचाने के लिए? या इस कारण से कि उसकी मृत्यु निकट आ गई है? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"राजन, राजा और सन्यासी के दृष्टिकोण में कहीं भी साम्यता नहीं है! मनुष्यों की सहायता करना सन्यासी ने अपना कर्तव्य मान लिया है। पर सन्यासी ने इस बात पर कभी विचार नहीं किया कि मनुष्यों के सामने उपस्थित होनेवाली समस्याएं न्याय संगत हैं या नहीं! उसके द्वारा भिखारियों तथा गरीबों में धन बाँटने में भी यही बात प्रकट होती है। उसने चोरी की बात की कल्पना तक नहीं की। इसलिए चोर को राजा के हाथ सौंपने का सवाल ही नहीं उठता। सन्यासी के मन में किसी प्रकार की कामनाएं नहीं हैं, इसलिए मृत्यु से उसके न डरने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन राजा की दृष्टि में चोरी करना अगर एक अपराध है तो राज्य के धन को भिखारियों में बाँट देना इससे भी बड़ा राजनैतिक अपराध है। इसलिए राजा के द्वारा सन्यासी को मृत्यु दण्ड देने में किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# सपने की बात

एक राजा था, वह बड़ा ही सनकी था। वह अक्सर किसी व्यक्ति से कोई अंट-संट सवाल पूछ बैठता, यदि वह उसका जवाब न दे पाता तो उसे कारागार में बंदी बनाता।

एक बार रानी की जन्मगांठ निकट आई देख राजा ने एक सुनार को बुलवा भेजा और कहा–"सुनो, मुझे सपने में मोर की आंख जैसा एक रत्नहार दिखाई दिया है, ऐसा ही एक हार दस दिन के अन्दर बनाकर ले आओ।"

सुनार ने रात-दिन मेहनत करके अनेक प्रकार के रंगोंवाला एक सुंदर रत्नहार तैयार किया और राजा के हाथ सौंप दिया। राजा ने उसे देख यह कहते हुए उसे कारागार में भेज दिया कि "मैंने सपने में जो हार देखा, उसके जैसे यह हार नहीं है।"

इसके थोड़े दिन बाद सुनार के तेरह साल का लड़का राजा की सेवा में पहुंचा और बोला–"महाराज! आप ने सपने में जो हार देखा, वैसा ही हार मैं बना सकता हूं।" यों राजा को विश्वास दिलाकर सोना और रत्न खरीदने के लिए राजा से बहुत-सा धन लिया, अमुक दिन हार सौंपने की बात कहकर चला गया।

लेकिन सुनार का लड़का निश्चित दिन राजा को देखने न आया। उसके दूसरे दिन आकर पूछा–"महाराज! आप मुझे पुरस्कार दिलाइए।"

इस पर राजा ने पूछा–"अरे, रत्नहार कहां!" "महाराज! कल रात को आपने मुझे स्वप्न में दर्शन देकर वह हार ले लिया और मेरी बड़ी तारीफ़ की है न?"

राजा ने अपनी भूल जान ली और सुनार को कारागार से मुक्त किया।

# रसोई-विशेषज्ञ

एक गाँव में राधेश्याम और जानकी नामक भाई-बहन थे। उनके बचपन में ही उनके माँ-बाप मर गये थे। फिर भी राधेश्याम ने बड़े प्रेम से अपनी बहन को पाला-पोसा और युक्त वयस्का होने पर उसका विवाह निकट के गाँव के एक युवक के साथ किया और ससुराल भेज दिया।

जानकी के पति के भी माँ-बाप न थे। लोग उसे बड़ा बुद्धिमान मानते थे। उसके पास थोड़ी-बहुत पैतृक संपत्ति भी थी।

जानकी घर-गृहस्थी के कार्यों में बड़ी कुशल थी। ससुराल में पहुँचते ही उसने सारा जिम्मा अपने हाथ में लिया। जानकी के पति का नाम गणपति था। गणपति कभी घर से बाहर निकलता न था, सदा अपनी पत्नी के पीछे चक्कर लगाते हुए रसोई के बारे में तरह तरह के सवाल किया करता था। वह अकसर कहा करता था कि रसोई बनाना वह अच्छी तरह से जानता है।

सदा-सर्वदा गणपति के मुँह से रसोई के संबंध में बातें होते देख जानकी आश्चर्य में आ गई। गणपति के माँ-बाप उसके बचपन में ही गुजर गये थे। इस कारण उसने न केवल रसोई बनाना सीखा, बल्कि उसमें कुशलता भी प्राप्त कर ली। साथ ही वह भोजन-प्रिय था।

जानकी ने ससुराल में पहुँचकर पहली बार जो रसोई बनाई, वह गणपति को पसंद न आई। इसलिए उस दिन रात को गणपति खुद रसोई बनाने में जुट गया। कुछ ही मिनटों में उसने रसोई बनाई, इसे देख जानकी भी अचरज में आ गई।

उस दिन से लेकर गणपति ने जानकी को कभी रसोई घर में घुसने नहीं दिया, प्रति दिन वही तरह तरह के स्वादिष्ट

रामयश शर्मा

व्यंजन बनाकर अपनी पत्नी को घर बिठाये खिलाने-पिलाने लगा ।

अड़ोस-पड़ोस की औरतें यह कहते जानकी से ईर्ष्या करने लगीं कि "जानकी तो बड़ी भाग्यशालिनी है! उसे तो बढ़िया रसोई बनाकर खिलानेवाला पति मिल गया है ।"

प्रारंभ में ये शब्द सुनकर जानकी में अभिमान पैदा हुआ । मगर धीरे-धीरे उसे अपने पति के प्रति खीझ पैदा होने लगी । क्यों कि गणपति सिवाय रसोई बनाने के कुछ करता-धरता न था । कमाई की बात सोचता तक न था । दिन के बीतते-बीतते उसे अपने पति का काम अपमानजनक भी लगने लगा । उसने बहुत कुछ सोचा और विचारा, फिर भी उसके मन में यह बात न सूझी कि उसके पति की यह आदत कैसे छुड़ाई जाय!

एक दिन जानकी का भाई राधेश्याम अपनी बहन को देखने आया । उसने बताया कि वह अपने दस मित्रों के साथ तीर्थाटन पर जल्द ही जानेवाला है । उसने जब अपने बहनोई के बारे में पता लगाया तो उसे मालूम हुआ कि वह रसोई बनाने में डूबा हुआ है । रसोई घर में गणपति को मीठी पूड़ियाँ बनाते देख राधेश्याम की हँसी न रुकी ।

गणपति ने राधेश्याम को देख प्रसन्नता के साथ कहा–"राधेश्याम, तुम ठीक वक्त पर आ गये! मैं ये जो मीठी पूड़ियाँ बना रहा हूँ, इन्हें चखकर तुम्हें बताना होगा कि ये स्वादिष्ट हैं या नहीं?"

ये बातें सुनने पर जानकी का सर अपमान के भार से झुक गया ।

राधेश्याम दो दिन अपनी बहन के घर रहा । दोनों दिन गणपति ने ही रसोई बनाकर उसे खिलाया । रसोई तो अच्छी जरूर थी, पर गणपति का यह तरीक़ा राधेश्याम को पसंद न आया । गणपति जब किसी काम से बाहर गया हुआ था, तब जानकी ने सारी बातें अपने भाई को बताई

और उससे निवेदन किया कि उसके पति की इस आदत को छुड़ाने का कोई उपाय करे ।

सोचने-विचारने पर राधेश्याम को एक उपाय सूझा । गणपति के घर लौटने पर राधेश्याम ने उसे अपने तीर्थाटन की बात बताई और कहा–"तुम भी हमारे साथ क्यों नहीं चलते? तुम्हारा सारा खर्च मैं उठाऊँगा । जानकी मेरे घर आकर रहेगी ।"

गणपति के मन में तीर्थाटन पर जाने की इच्छा न थी, पर राधेश्याम ने जब जोर दिया तब उसने इस शर्त पर मान लिया कि उसका सारा खर्च वही उठायेगा । इसके बाद तीनों मिलकर राधेश्याम के गाँव पहुँचे ।

राधेश्याम ने अपने मित्रों को बताया कि उनके साथ तीर्थाटन पर उसका बहनोई भी जा रहा है और बताया–"दोस्तो, हमारे कार्यक्रम में थोड़ा-सा परिवर्तन हो गया है । हम जहाँ भी पड़ाव डालेंगे, वहाँ पर हम खुद खाना बनाकर खा लेंगे ।"

"यह तो बढ़िया उपाय है! हमारा खर्चा भी कम होगा और अच्छा खाना भी मिलेगा । लेकिन रसोई बनानेवाला कौन है?" मित्रों ने राधेश्याम से पूछा ।

"मेरे बहनोई गणपति पाक कला में प्रवीण हैं । वे ही रसोई का काम संभाल लेंगे ।" राधेश्याम ने उत्तर दिया ।

निश्चित दिन सभी लोग तीर्थाटन पर चल पड़े । एक तीर्थ में पहुँचकर धर्मशाला

में ठहरे, सबने स्नान आदि कालकृत्य समाप्त किये। सराय के मालिक ने उन्हें बर्तन आदि दिये। कुछ लोग बाजार में जाकर सब्जी, लकड़ी वगैरह खरीद ले आये। गणपति रसोई बनाने में लग गया, बाक़ी लोग उस नगर के मंदिर और प्रमुख स्थलों को देखने चल पड़े।

गणपति ने इधर रसोई समाप्त की, उधर वे लोग सभी दर्शनीय स्थल देखकर लौट आये। सबने गणपति के द्वारा बनाई गई रसोई की खूब तारीफ़ की, और दो जून के लिए बनाई गई रसोई एक ही जून में समाप्त कर डाली। सबने थोड़ी देर तक आराम किया, जब वे लोग फिर अन्य स्थान देखने निकले, तब बेचारे गणपति को फिर से रसोई की तैयारियाँ करनी पड़ीं।

बाक़ी तीर्थों में भी क़रीब-क़रीब कुछ ऐसा ही हुआ। गणपति को छोड़ बाक़ी लोग दर्शनीय स्थल देखकर प्रसन्न हो जाते थे, पर गणपति का सारा समय रसोई बनाने में बीत जाता। गणपति किसी भी स्थान को देखने न जा सका, इस वजह से उसे खुद अपने ऊपर घृणा हो गई। उसकी रसोई की तारीफ़ सुनते-सुनते वह ऊब गया, उल्टे उन पर उसे गुस्सा भी आने लगा। वैसे उसके रुपये बरबाद हुए, साथ ही इस तीर्थाटन में उसे बेगारी करनी पड़ी। दस लोगों के लिए दोनों जून खाना बनाना साधारण बात थोड़े ही थी!

तीर्थाटन से लौटने पर गणपति और जानकी राधेश्याम के घर से अपने घर लौट आये। मगर गणपति पहले जैसे रसोई घर में न जाकर बरामदे में जा बैठता। उसे देखने आनेवालों को तीर्थाटन की बातें नमक-मिर्च लगाकर सुना देता।

उस दिन से गणपति फिर कभी रसोई घर में न घुसा। उसमें यह परिवर्तन देख जानकी बड़ी प्रसन्न हो गई। आश्चर्य की बात यह थी कि जानकी की रसोई की अब वह आलोचना न करता था, चुपचाप खा लेता था।

# जूतों का चोर!

राघवदास और श्यामदास पड़ोसी थे। राघव थोड़ा संपन्न था और श्याम गरीब था! मगर वह कड़ी मेहनत करके धन की किफ़ायती करते हुए संपन्न होने लगा। राघव के मन में श्याम के प्रति इसलिए ईर्ष्या हुई कि श्याम जल्द ही आर्थिक दृष्टि से उसके बराबर का दर्जा हासिल करेगा। एक बार राघव ने नये जूते ख़रीदे, इस पर श्याम ने बताया कि वह भी नये जूते ख़रीदने की इच्छा रखता है। राघव ने उसे समझाया– "तुम जूते पहनने की आदत मत डालो। थोड़े दिन बाद तुम बिना जूतों के चल-फिर न पाओगे, तुम्हारे पैसे बरबाद हो जायेंगे।"

लेकिन श्याम ने एक महीने बाद जूते ख़रीदे, एक दिन वह नये जूते पहनकर मंदिर में गया। जूते बाहर उतारकर मन्दिर की प्रदक्षिणा करके लौटा, तो देखता क्या है, उसके जूते गायब हैं, पर उसे वहाँ पर राघव दिखाई दिया। किसी ने श्याम को सलाह दी कि बरगद के नीचे बैठनेवाले जटाधारी स्वामी से पूछे तो शायद वे समुचित उत्तर दे सके। इसके बाद एक दिन राघव ने श्याम से पूछा–"क्या तुमने जटाधारी स्वामी से पूछा? उन्होंने जूतों के बारे में कैसा उत्तर दिया है?"

"स्वामीजी ने बताया है कि जूतों का खो जाना अच्छा ही हुआ है। मेरी दरिद्रता जूते चुरानेवाले के सर पर सवार हो गई है। यह भी बताया है कि वह एक साल के अंदर भिखारी बन जाएगा। कमबख़्त जूते, खो गये, अच्छा हुआ।" श्याम ने कहा।

दूसरे दिन श्याम मंदिर में पहुँचा तो देखा, उसके जूते वहीं रखे हुए हैं। इसके बाद श्याम ने राघव से कहा–"दोस्त! मैं स्वामी को देखने कभी नहीं गया।"

# चापलूसी

अवंतीदेश का राजा भास्कर सेन अत्यंत समर्थ था, इसलिए वह जल्द ही लोकप्रिय हो चला था। इसका खास कारण सुमान्य नामक उसके एक सलाहकार था। वह राजकर्मचारियों से संबंधित सारे मामले देखा करता था। उसका काम था कि किस किस शाखा में कितने कर्मचारियों की आवश्यकता है, किस किसके ओहदे बढ़ाये जा सकते हैं, किस किसका वेतन कितना होना चाहिए। इसी कारण राजकीय कार्य अत्यंत कुशलतापूर्वक सपन्न हो जाते थे।

सुमान्य की पत्नी को यह मालूम न था कि उसका पति फलाना काम करता है, पर वह केवल इतना मात्र जानती थी कि उसके पति का काम अत्यंत ही महत्वपूर्ण है, उसे इस बात का दुख था कि अनेक वर्ष बीत जाने पर भी उसके पति की कमाई में कोई खास उन्नति नहीं हो रही है। जब भी लक्ष्मी यह बात अपने पति से कहती, वह यही उत्तर देकर उसका मुँह बंद कर देता था—"जब हमारी कमाई खाने-पीने के लिए पर्याप्त न हो, तभी यह बात सोची जा सकती है।"

आखिर एक दिन लक्ष्मी ने अपने पति से इस बात को लेकर झगड़ा किया—"आप के पीछे राजा की नौकरी में भर्ती होकर आप से भी छोटे पद पर रहनेवाले सब महल बनवा रहे हैं। हम लोग असमर्थों की भांति अपना मकान बनवा नहीं पा रहे हैं।" इन शब्दों के साथ लक्ष्मी ने कुछ लोगों के नाम भी गिनाये।

इस पर सुमान्य ने लक्ष्मी से पूछा—"तुम्हारा कहना सच है, लेकिन यह बताओ कि थोड़े से दिनों में उन्हें इतना सारा धन कैसे प्राप्त हुआ है?"

"वसुंधरा"

"राजा की चापलूसी करने से! आज कल हम अत्यंत विश्वासपात्र बनकर अपने कर्तव्य करते जाय तो कोई फ़ायदा नहीं! अक्सर राजा के दर्शन करते रहने चाहिए। उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। उन्हें कोई न कोई भेंट देनी चाहिए। सुदामा ने भी कृष्ण को चिउड़े अर्पित किये, तभी जाकर कृष्ण ने उन्हें समस्त प्रकार के वैभव प्रदान किये।" लक्ष्मी ने समझाया।

पत्नी की बातों का असर सुमान्य पर पड़ा। उस दिन से वह राजा के दर्शन करनेवालों पर खास निगरानी रखने लगा। राजा की झूठी तारीफ़ करके उन्हें कोई छोटा-सा उपहार समर्पित करनेवालों को राजा का सम्मान प्राप्त होता है! वह साल भर मेहनत करके जो धन कमाता है, उतना धन ये लोग कुछ ही मिनटों में कमा रहे हैं!

इस सत्य को जानने के बाद सुमान्य का मन बदल गया। वह धीरे-धीरे अपने आचरण को बदलने लगा। कोई न कोई बहाना बनाकर राजा के दर्शन करना, झूठी तारीफ़ करके उनको प्रसन्न बनाने का प्रयत्न करना, जब-तब राजा को उपहार देना, सुमान्य ने भी प्रारंभ किया।

यों थोड़े दिन बीत गये। एक दिन राजा भास्कर सेन ने अपने मंत्री से कहा–

"मंत्री महोदय, मुझे लगता है कि सुमान्य की जगह किसी दूसरे व्यक्ति को नियुक्त करना उत्तम होगा। सुमान्य के लिए कोई दूसरी नौकरी देंगे! आपका क्या विचार है?"

"महाराज, सुमान्य जैसा समर्थ व्यक्ति उस पद के लिए प्राप्त होना कठिन है!" मंत्री ने कहा।

"मेरा विचार है कि सुमान्य में पहले जो सामर्थ्य थी, वह अब नहीं रही।" राजा ने कहा।

"कैसे, महाराज?" मंत्री ने पूछा।

"एक समय था, जब वह अपने सारे कार्य स्वयं करता और केवल उसके निर्णय

मुझे सुनाने के लिए आ जाता था। पर आज कल वह निर्णय का भार मुझ पर छोड़ता जा रहा है। दूसरी बात-पहलें की अपेक्षा वह अक्सर मुझसे मिलने आने लगा है। इसका मतलब है कि उसे काफ़ी फ़ुरसत मिलती है। अलावा इसके छोटे-छोटे उपहार देकर वह मुझे खुश करने का प्रयत्न कर रहा है, इसके पूर्व जो व्यक्ति अपने कार्य के द्वारा मुझे खुश कर रहा था, वही अब अपने उपहारों के द्वारा मुझे प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है तो इसका मतलब है कि उसकी सामर्थ्य में कमी आ गई है! वह अपने पूर्व के आदर्श को त्यागता जा रहा है। यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" राजा ने कहा।

मंत्री थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"महाराज! एक बार मुझे उसके साथ बात करने का मौक़ा दीजिए, तब निर्णय करेंगे।" राजा ने मान लिया।

मंत्री ने सुमान्य से मिलकर कहा–"समर्थ कर्मचारी अपनी जिम्मेदारी स्वयं अच्छी तरह से पूरा करता है। असमर्थ व्यक्ति राजा की चापलूसी करके ऊँचे पद प्राप्त करना चाहता है। हाल ही में आप के व्यवहार पर राजा के मन में संदेह पैदा हो गया है। आप की नौकरी के छूट जाने की संभावना है।"

इस पर सुमान्य ने अपनी सारी हालत मंत्री को सुनाई। मंत्री ने ये बातें राजा के कान में डाल दीं।

राजा को अपनी भूल मालूम हो गई। 'सुमान्य जैसा दक्ष व्यक्ति गलत रास्ते पर बढ़ने लगा तो वह जान पाया, मगर ऐसे ही कार्य करनेवाले असमर्थ व्यक्तियों को वह जान नहीं पाया।' यों सोचकर राजा ने सुमान्य के लिए एक अच्छा महल बनवा कर दिया और उस दिन से उसकी प्रशंसा करनेवालों तथा उसे भेंट देने आनेवालों के प्रति राजा रूखा व्यवहार करने लगा। फिर क्या था, धीरे-धीरे देश में असमर्थ व्यक्तियों को राजा का आश्रय मिलना दूभर हो गया।

संसार के आश्चर्य :

# १७४ क्षमा देवी

चीन के पिनचौ नामक नगर के समीप में स्थित टपोट्से की "क्वानइन" नामक क्षमा देवी की मूर्ति है। वहां इस मूर्ति को सीध में रहनेवाले लाल पत्थरों के पहाड़ में गढ़कर सोने के मुलम्मे तथा विविध रंगों से बनाया गया है। इसके बायीं तरफ़ ६५ फुट ऊँची बुद्ध की मूर्ति है। उस मूर्ति के हाथों की उंगलियों तथा नखों को भी इस चित्र में देख सकते हैं।
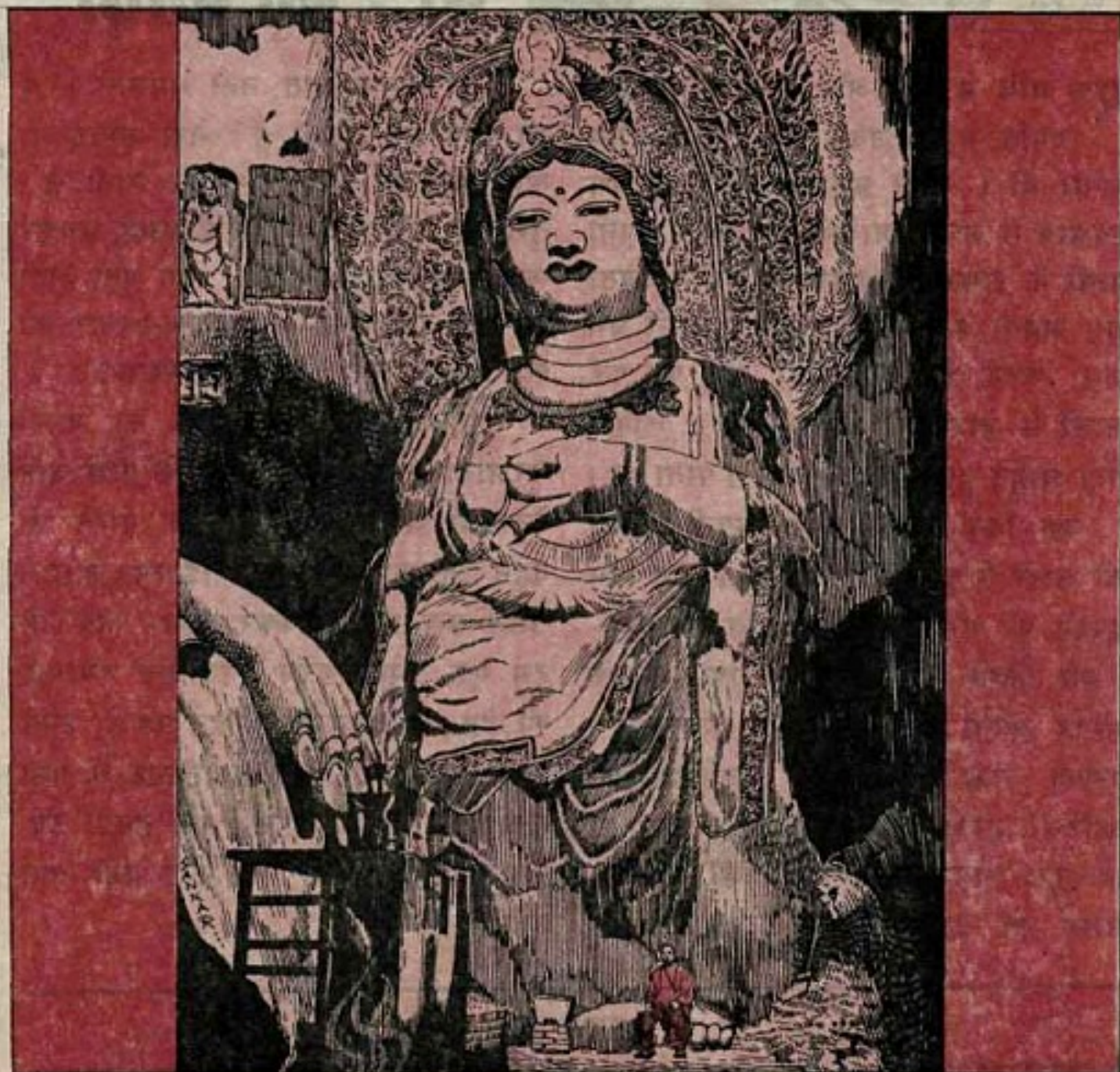
# बेटी की शादी

एक गाँव में गोपू और गौरी नामक एक दंपति था। उनके एक विवाह योग्य कन्या थी। गौरी झगड़ालू थी, गोपू वैसे स्वभाव से अच्छा आदमी था, मगर अपनी पत्नी के झगड़ालू स्वभाव के सामने दबता था, अपनी कन्या की शादी के वास्ते धन जमा करने के लिए गौरी गोपू पर कई सालों से जोर देती आ रही थी। लेकिन गोपू चाहते हुए भी कुछ बचा न पाता था।

एक दिन उनकी कन्या अपनी सहेली की शादी में दूसरे गाँव में गई। उस दिन दुपहर को गौरी ने अपने पति से कहा– "हमें किसी भी हालत में एक मास के भीतर अपनी बेटी की शादी करनी है। उसकी उम्र की सभी लड़कियों की शादियाँ होती जा रही हैं। तुम तो बिलकुल लापरवाह हो! मैं कहाँ तक इस झंझट को उठा सकती हूँ?"

"अरी, तुम बात नहीं समझती। मैं भी क्या कर सकता हूँ? मेरी कमाई तो खाने भर के लिए खर्च हो जाती है। तुम्हारी देह पर जो गहने हैं, उन्हें बेचकर लड़की की शादी करेंगे। तुम बूढ़ी होती जा रही हो! तुम्हें अब बनाव-सिंगार की क्या जरूरत है?" गोपू ने समझाया।

गोपू की बातें सुन गौरी का चेहरा मुरझाया गया। वह गहनों के पीछे जान देनेवाली थी। अपनी बेटी के वास्ते भी गहने उतारकर देना उसे कतई पसंद न था। उसने पल भर सोचकर कहा–"तब तो हम एक उपाय करेंगे! पड़ोसिन रमाबाई की देह पर इतने सारे गहने पड़े हैं, उनसे हम अपनी लड़की की शादी ठाठ से मना सकते हैं। उन गहनों को हड़प लेंगे, रमाबाई को धोखा देना कोई बड़ी बात नहीं है।"

वसुधा गुप्त

गहनों को हड़पने की योजना गौरी ने यों बनाई: उस रात को गोपू अपने पिछवाड़े के मवेशीखाने में जा छुपेगा। गौरी रमाबाई से यह बताकर कि उसका पति किसी काम से दूसरे गाँव में गया है, रमाबाई को बुला लाएगी। आधी रात के क़रीब गोपू अपने बदन पर कंबल ओढ़े छुरी दिखाकर दोनों औरतों के गहने हड़पकर ले जाएगा। इसके बाद वे गहने बेचकर लड़की की शादी की जाएगी।

गोपू को यह योजना पसंद न आई, उसने पहले इसका विरोध किया, पर आखिर उसे अपनी पत्नी की बात माननी ही पड़ी।

उस दिन शाम को गौरी रमाबाई के घर पहुँची, उसने समझाया—"रमाबाई, तुम जानती हो, मेरा पति किसी गाँव में गया है, लड़की अपनी सहेली की शादी में गई है। मैं अकेली घर में नहीं रह सकती। मुझे डर लगता है, इसलिए आज रात को तुम मेरे घर आ जाओ, मेरी मदद करो।"

"अच्छी बात है। यह मेरे लिए कौन बड़ी तक़लीफ़ का काम है? मैं आ जाऊँगी।" रमाबाई ने जवाब दिया।

इसके बाद गौरी अपने घर लौट आई। संध्या के समय अपने पति को खाना खिलाकर उसे मवेशीखाने में भेज दिया। उसी वक़्त उसके हाथ एक कंबल देकर बोली—"तुम इसे ओढ़ लो, छुरी दिखाते समय तुम धमकी दो, दोनों के गहने

उतारना न भूलो। तुम अपनी आवाज़ भी बदल डालो।"

अंधेरा फैल जाने पर रमाबाई गौरी के घर आई। गौरी यह सोचकर डर गई थी कि कहीं रमाबाई अपने सारे गहने उतारकर न आवे! पर रमाबाई की देह पर उसके सारे गहने पड़े हुए थे।

दोनों औरतें थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करती रहीं, तभी अपने बदन पर कंबल ओढ़े, भयंकर रूप से चिल्लाते हुए, हाथ में छुरी लेकर एक आकृति उनके निकट आकर खड़ी हो गई। गौरी चीख उठी–"बाप रे बाप! यह तो चोर है! कहीं हमारे गहने लूटने के लिए तो नहीं आया है?" इन शब्दों के साथ उसने भय का अभिनय किया। अपने सारे गहने उतारकर चोर के हाथ देते हुए बोली–"रमाबाई! जान हो तो जहाँ है! तुम भी अपने गहने उतारकर दे दो।"

दोनों ने अपने गहने उतारकर नक़ाबवाले के हाथ दे दिये। चोर पिछवाड़े के रास्ते से चला गया। उस रात को वे दोनों औरतें सोई नहीं! एक दूसरे को सांत्वना देते बैठी रह गईं। सवेरा होते ही यह बात गाँववालों को बताने के ख्याल से रमाबाई वहाँ से चली गई। गौरी पिछवाड़े में गई। मवेशीखाने में सोनेवाले अपने पति को जगाया। गोपू आँखें मलते हुए उठ बैठा, जंभाइयाँ लेते हुए बोला–"क्या इतनी जल्दी रमाबाई आ गई?"

गौरी ने चकित होकर पूछा–"तुम यह क्या कहते हो? रात में गहने हड़पकर तुम न ले गये?" जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका पति रात भर मवेशीखाने में सोता ही रह गया, उसका दुख फूट पड़ा।

एक महीने के बाद रमाबाई ने अपनी बेटी की शादी ठाठ से संपन्न की, वैसे वह भी धन के अभाव में अपनी कन्या की शादी को लेकर परेशान थी, तब जाकर गौरी ने भाँप लिया कि उसके दिमाग में जो धोखा देने की बात सूझी थी, वही बात रमाबाई के दिमाग में सूझ गई थी।

# चुनाव

एक बार मगध राज्य में सेनापति का पद खाली हो गया। उसे पाने के लिए राणा, रंजित और किशोर नामक युवक पूरी कोशिश करने लगे। लेकिन मंत्री ने एक युक्ति सोची और तदनुसार दरबारी विदूषक को उस पद पर नियुक्त करवाया।

तलवार तक चला न सकनेवाले विदूषक के अधीन काम करना राणा को अपमानजनक लगा और वह क्रोध में आकर विदूषक को मारने के प्रयत्न में पकड़ा गया। राजा अपना वेष बदलकर रंजित से मिला और विदूषक के सेनापति होने की बात छेड़ दी।

रंजित ने तैश में आकर कहा-"मुझ जैसे महान वीर को छोड़ राजा ने आँख मूँदकर विदूषक को सेनापति के पद पर नियुक्त किया है, यदि निकट भविष्य में युद्ध होगा तो विदूषक के द्वारा राजा का गर्व भंग निश्चित है। उस वक़्त मैं राजा की मदद न करूँगा।"

इसके बाद राजा वेश बदलकर किशोर से मिला। किशोर ने कहा-"महाराजा बिना सोचे-समझे कोई काम नहीं करते। विदूषक के द्वार कोई उपयोग होगा।"

फिर क्या था, सेनापति का पद किशोर को प्राप्त हुआ।

# भाग्यरेखा

**सी**तापुर का राजा तपनकुमार अत्यंत समर्थ शासक था। उसके शासन में जनता सुखी थी। यदि सुख किसी को प्राप्त न था तो वह राजा था। क्योंकि राजा का विवाह पांच साल पूर्व अनसूयादेवी के साथ हुआ था। लेकिन अभी तक उनके कोई संतान न हुई थी।

राजा तपनकुमार ने सोचा कि 'अनसूयादेवी के संतान न होने का कारण उसमें कोई तृटि होगी।' यों सोचकर राजा उसके प्रति अनादर का भाव रखने लगा।

वृद्ध कोशाध्यक्ष चारुदत्त स्वभाव से अत्यंत कुटिल था और साथ ही बुद्धिवान था। उसके एक अत्यंत रूपवती कन्या थी। उसका विवाह राजा के साथ करके वह दरबार में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता था और राजा का श्वसुर कहलाना चाहता था। उसने अनसूयादेवी के प्रति ईर्ष्या पैदाकर, राजा को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए अपनी पुत्री को राजा से मिलने के अनेक अवसर पैदा किये, तपनकुमार को चारुदत्त की पुत्री चंद्रिका अपनी ओर आकृष्ट करने लगी।

यह बात भाँपकर चारुदत्त ने राजा से कहा–"महाराज! आप मेरी पुत्री को अपनी दासी के रूप में क्यों न स्वीकार करते? रानी अनसूया के द्वारा पांच वर्षों के भीतर आप के कोई संतान न हुई, इस कन्या के द्वारा आप को संतान की प्राप्ति होगी। चंद्रिका नवयौवना है और रूपसी भी। वह आप के जीवन में आनंद के साथ प्रकाश भी दे सकती है।"

राजा ने उत्तर दिया–"मैं इस बात पर तत्काल कोई निर्णय नहीं ले सकता। आप मुझे थोड़ा समय दीजिए।"

ए. सी. सरकार, जादूगर

"कोई जल्दी नहीं है, महाराज! आप से मेरा इतना ही निवेदन है कि आप इस बात को कृपया अपने मन में रखिए।" चारुदत्त ने कहा। थोड़े दिन बाद राजा तपनकुमार ने अपने प्रधान मंत्री श्रीमान को बुलवाकर पूछा-"मंत्री महोदय, मैं दूसरा विवाह करना चाहता हूँ। इस संबंध में आप का क्या विचार है?"

मंत्री ने पूछा-"महाराज! अचानक आप के मन में यह विचार कैसे पैदा हुआ?" इस पर राजा ने मंत्री को चारुदत्त की बातें सुनाकर कहा-"महामंत्री, मैंने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है! हमें तो इस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करना है न! मैं आप की सलाह लिये बिना कोई निर्णय कभी नहीं लेता।"

"तब तो महाराज, मुझे अपना विचार बताने के लिए थोड़ा समय दीजिए।" महामंत्री ने उत्तर दिया।

"यदि आप अपना विचार शीघ्र बतला दे, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।" राजा ने कहा।

महामंत्री ने ही बेल्लनगर की राजकुमारी अनसूयादेवी के साथ राजा का विवाह सपन्न कराया था। महामंत्री अनसूयादेवी को अपनी पुत्री के समान मानता था। उसके संतान न होने का दुख महामंत्री

को कम न था। इसलिए तपनकुमार का विचार जानने पर महामंत्री को लगा कि उसके सिर पर मानो वज्रपात हो गया है।

महामंत्री ने अनसूयादेवी से मिलकर राजा का विचार सुनाया। यह समाचार सुनते ही वह हताश हो गई और रोते हुए बोली-"महामंत्री! आप मेरी रक्षा कीजिए। मेरे संतान न होने के कारण यदि वे दूसरा विवाह करेंगे तो मैं जीवित नहीं रहूँगी। मेरी अवस्था ही क्या है? मेरे संतान क्यों नहीं हो सकती? कल शिवरात्रि के दिन मैंने रात-दिन उपवास किया, आज प्रातःकाल थोड़ी देर के लिए आँख लग गई। तब स्वप्न में शिवजी ने

की सहायता चाहिए । तुम अपने डाकवाले कबूतर को दोगी तो उसकी मदद से खबर भेजकर आज रात तक जवाब मंगवा सकते हैं, वहाँ से उत्तर मिलते ही मेरे पास भेज दो ।"

अनुसूयादेवी ने महामंत्री को अपना कबूतर दिया । मंत्री धीमान उसे अपनी शाल की ओट में छिपाकर ले गया ।

दूसरे दिन सवेरे मंत्री धीमान राजा से मिला और यह समाचार दिया कि वह काली माता की विशेष प्रकार से पूजा का प्रबंध कर रहा है । मंत्री ने यह भी बताया–"कल रात को महाकाली ने स्वप्न में मुझे दर्शन देकर बताया कि दिन भर मैं उपवास करूँ और आप के नाम पर विशेष रूप से उनकी पूजा कराऊँ, यह भी कहा कि आप के द्वारा रानी को दूर करना देवीजी के लिए अप्रसन्नता की बात है । क्योंकि आप दोनों के शरीर और आत्माएँ एक हैं ।"

इस पर तपनकुमार ने व्यंग्यपूर्ण हंसी हंसकर कहा–"महामंत्री, आप अपनी मन गढ़ंत कहानियाँ और सुनाते जाइए । मैं जानता हूँ कि आप अनसूयादेवी के प्रति विशेष वात्सल्य रखते हैं । आप यह कोशिश कर रहे हैं कि किसी भी उपाय से सही, मेरे मन को उनकी ओर प्रवृत्त

दर्शन देकर बताया कि मेरे हाथ में जो छोटा-सा फल है, उसके खाने पर मेरे गर्भ-से एक पुत्र पैदा होगा । मैंने निद्रा से जागकर देखा, सचमुच मेरे हाथ में एक फल था, आप देखिये, वही यह फल है ।" रानी ने मंत्री को फल दिखाया ।

फल को देख महामंत्री ने कहा–"महारानीजी, ईश्वर ने तो तुम पर अनुग्रह किया है, पर तुम्हारे पति इसे एक कपट नाटक मानकर इनकार कर सकते हैं । वे दूसरा विवाह करना चाहते हैं, इस प्रयत्न को सदा के लिए हटाने का कोई उपाय ढूंढ़ना चाहिए । मुझे तुम्हारे पिता के दरबारी जादूगर मायाधर

करे। लेकिन याद रखिये, यह असंभव है। क्योंकि मैं केवल संतान चाहता हूं।"

"महाराज, आप मेरी बातों पर विश्वास न करें, कोई बात नहीं, लेकिन पूजा कराने के लिए मुझे अनुमति मात्र प्रदान कीजिए।" मंत्री धीमान ने कहा।

"मंत्री महोदय, पूजा कराने से आप को कौन मना कर रहा है? मैं भी मंदिर में चलूंगा।" राजा ने जवाब दिया।

महामंत्री ने श्रद्धा एवं भक्ति के साथ महाकाली की पूजा कराई, उस वक़्त राजा तथा रानी देवी महाकाली की मूर्ति के सामने बैठे रहें। पूजा के समाप्त होते ही मंत्री धीमान इस प्रकार लुढ़ककर नीचे गिर पड़ा, मानो उसमें देवीजी का प्रवेश हो गया हो! फिर चिल्लाने लगा–"माता, माता!" इसके उपरांत वह उठ खड़ा हुआ और बोला–"मैं फिर कह रहा हूं, तपनकुमार के जीवन और आत्मा में भी अनसूयादेवी समान अधिकार रखती हैं। वह तपनकुमार के जीवन से किसी भी हालत में अलग नहीं हो सकतीं।"

ये शब्द सुनने पर तपनकुमार के चेहरे में तिरस्कार का भाव उदित हुआ और बोला–"महामंत्री, अब मैं चला जा रहा हूँ। ये निरर्थक बातें सुनने के लिए मेरे पास न समय है और सब्रता ही।"

"ठहरो! वहां से मत हिलो!" महामंत्री गरजकर बोला–"मैं महाकाली हूँ! धीमान की वाणी में बोल रही हूँ। क्या तुम सबूत चाहते हो?"

ये शब्द सुनकर तपनकुमार झट से लुढ़क पड़ा। धीमान उठ खड़ा हुआ। महाकाली के चरणों के पास से सिंदूर का ढेला उठाया, फूल का एक डंठल भी लेकर आगे आया और बोला–"महाराज, आप अपनी बायीं हथेली एक बार खोल दीजिए तो! महारानीजी, आप भी!" यों कहते वह उनके निकट आकर बैठ गया।

"महाराज! आप किसी बात पर विश्वास नहीं करते हैं न! आप अपनी

तथा महारानी की हथेली को भी अच्छी तरह से परख लीजिए। बाद को आप कह सकते हैं कि धोखा-धड़ी हो गई है!" महामंत्री ने कहा।

राजा ने अपनी तथा महारानी की हथेली की अच्छी तरह से जाँच की।

धीमान ने सिंदूर के ढेले में से फूल के डंटल के द्वारा थोड़ा सिंदूर निकाला, महारानी की हथेली की भाग्यरेखा में एक पतली लकीर खींच दी तब उन्हें मुट्ठी बंद करने को कहा। इस पर रानी ने वैसा ही किया।

इसके बाद मंत्री ने तपनकुमार के हाथ में दो लकीरें, सीधे व आड़े सिंदूर से खींच दी, फिर उसे अपनी जेब रूमाल से पोंछकर बोला-"मैंने कहा था कि अनसूयादेवी आप के जीवन की संगिनी है, इसका प्रमाण यही है। मैंने उनकी हथेली में एक ही लकीर खींच दी है। मगर आप के हाथ की आड़ी रेखाएँ उनके हाथ में बदल गई हैं।"

ये बातें सुन अनसूयादेवी ने मुट्ठी खोल दी। उनकी हथेली में एक पर एक दो सीधी व आड़ी रेखाएँ दिखाई दीं। तपनकुमार वे रेखाएँ देख लज्जित हुआ और रानी से क्षमा मांग ली, साथ ही यह वचन दिया कि उनके साथ कभी ऐसा रुष्ट व्यवहार न करेगा।

ईश्वर की कृपा से कालांतर में अनसूया ने एक पुत्र का जन्म दिया। थोड़े दिन बाद जब वह अपने पुत्र को लेकर मायके गई तब अपने पिता के दरबारी जादूगर को बुलाकर पूछा-"मैंने महामंत्री से उनके किये इंद्रजाल का रहस्य पूछा तो उन्होंने नहीं बताया, वह रहस्य क्या है?"

"बेटी, इसमें कोई बड़ा रहस्य नहीं है। सिंदूर बड़ी आसानी से हाथ में चिपक जाता है। तुम्हारी हस्तरेखा में मैंने सिंदूर की जो रेखा खींच दी, वह हथेली के बंद करने पर हस्तरेखा के साथ चिपक गई है।" मायाधर ने कहा। इस तरह रानी की भाग्यरेखा ने उसके भाग्य की रक्षा की।

# बुरा सोचे तो भला!

एक बार राजा पंच महा पातक के पास मंगल और जगन नामक दो आदमियों को सिपाही पकड़ लाये। मंगल नौटंकी देख रहा था तो जगन ने उसके हाथ की अंगूठी हड़प ली। इस पर जगन ने मंगल को सिपाहियों के हाथ पकड़ा दिया। सिपाही दोनों को राजा के पास ले आये। जगन ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

"सुनो, जगन के मन में तुम्हारी अंगूठी चुराने की दुर्बुद्धि इसलिए पैदा हुई कि तुमने अपनी उंगली में सोने की अंगूठी पहन ली। इसलिए गलती तुम्हारी ही है। लेकिन यह बताओ, यह अंगूठी तुम्हें कैसे प्राप्त हुई?" राजा ने पूछा। मंगल ने बताया कि वह अंगूठी उसे अपने ससुर ने दी है।

राजा ने मंगल के ससुर को बुलवाकर पूछा-"बताओ, यह अंगूठी तुम्हें कैसे मिली?"

"महाराज, मैंने इसे नगर के जौहरी से ख़रीदी है।" मंगल के ससुर ने जवाब दिया। जौहरी से पूछने पर उसने बताया कि जुआखोर करमसिंह ने उसके हाथ बेच दी है। राजा ने करमसिंह को बुलवाकर यही सवाल पूछा।

"महाराज, युवराजा ने जुए में हारकर मुझे यह अंगूठी दी है।" करमसिंह ने कहा।

राजा ने थोड़ी देर तक सोचकर यों फ़ैसला सुनाया-"हमारी संपत्ति न्याय संगत थी, इसलिए यह चीज फिर हमारे हाथ आ गई। इसने चोरी की और पकड़ा गया। इस तरह हमारे पास पहुँचा दी। इसलिए मैं इसे एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के साथ "सद्गुणश्री" नामक उपाधि देता हूँ। लेकिन यह अंगूठी आज तक मंगल पहनता रहा, इस अपराध में उसे मैं सौ स्वर्ण मुद्राओं का दण्ड देता हूँ।"

इस प्रकार जगन ने बुरा सोचा तो उसका भला हुआ।
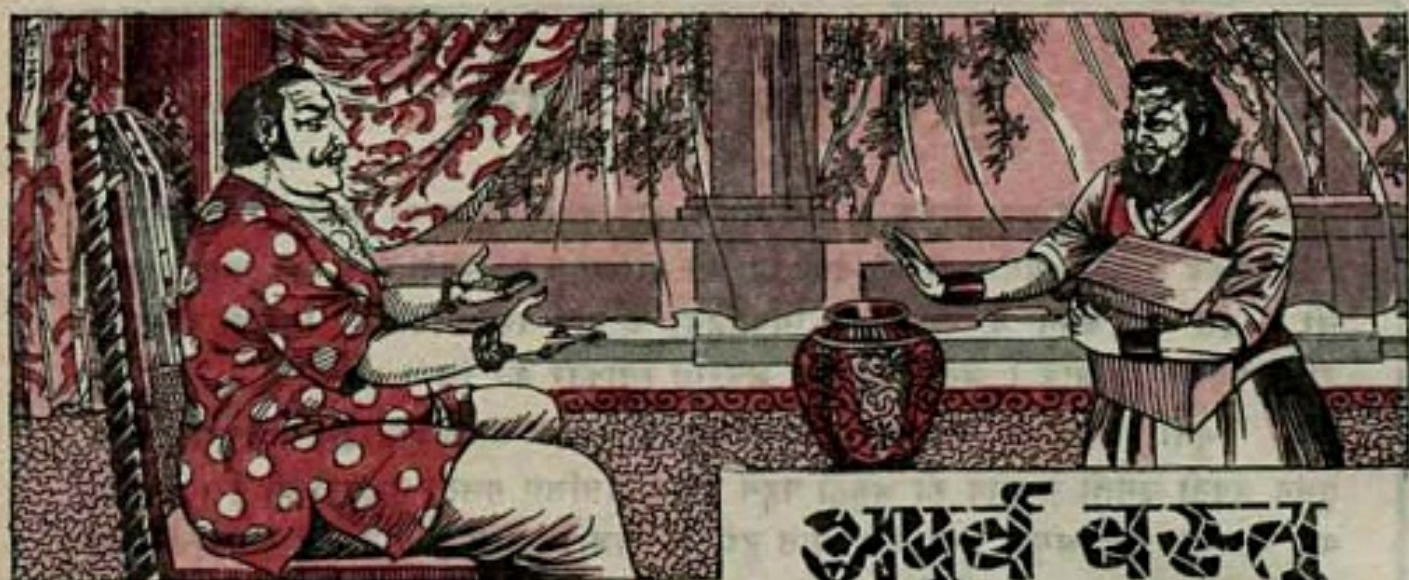
मगध राज्य के चक्रपुर नामक नगर में श्रीगुप्त नामक एक धनी व्यापारी था। वह अपूर्व वस्तुओं का संग्रह करने का शौक रखता था। इसलिए अधिक दाम देकर भी ऐसी वस्तुओं को खरीदा करता था। इसलिए अनेक व्यापारी ऐसी चीजें लाकर श्रीगुप्त के हाथ बेचा करते थे। वह भी लोगों को ऐसी चीजें लाकर बेचने का प्रोत्साहन देता था।

एक बार एक व्यापारी ने श्रीगुप्त को थोड़ी-सी अपूर्व वस्तुएँ दिखाईं। श्रीगुप्त ने उन सारी चीज़ों को उचित दाम देकर ख़रीद लिया। तब व्यापारी ने श्रीगुप्त से कहा–" महाशय, मेरे पास एक और अपूर्व वस्तु है। लेकिन गैं उसे कदापि बेचना नहीं चाहता हूँ। आप ने वैसे असंख्य अपूर्व वस्तुओं का संग्रह किया है, पर आपके यहाँ भी ऐसी चीज नहीं है।"

इस पर श्रीगुप्त के मन में उस वस्तु को देखने का बड़ा कुतूहल पैदा हुआ। उसने व्यापारी से पूछा कि उसे वह वस्तु दिखा दे।

व्यापारी ने अपनी संदूक़ में से मरकत जड़ी एक सुराही निकाली! वह सुराही देखने में अद्‌भुत थी। उस पर सुंदर फूल और लताएँ जड़ी हुई थीं। उस सुराही को देखते ही श्रीगुप्त को लगा कि उसका मूल्य अधिक से अधिक चुकाकर खरीद लेना चाहिए। मगर व्यापारी ने साफ़ बताया कि वह किसी भी मूल्य पर उसे बेचने को तैयार नहीं है। ये शब्द कहकर वह चला गया।

श्रीगुप्त के मन में यह विचार आया कि उसने आज तक जिन अपूर्व वस्तुओं का संकलन किया है, वे सब उस सुराही की बराबरी न कर सकेंगी। उसे लगा कि

रमाकांत गोयल

उस सुराही का संग्रह न करे तो उसकी अपूर्व वस्तुओं में एक बड़ा ही अभाव माना जाएगा और उसका संग्रह अपूर्ण ही रह जाएगा।

एक सप्ताह बाद अचानक सुराहीवाला व्यापारी पुनः श्रीगुप्त के घर पहुँचा। उसने इस बार स्वयं बताया कि व्यापार के वास्ते उसे अधिक मूल धन की आवश्यकता आ पड़ी है, अतः वह लाचार होकर मरकत जड़ी वह सुराही बेचना चाहता है। ये बातें सुन श्रीगुप्त अत्यंत प्रसन्न हुआ। मुँह माँगा धन देकर उसने व्यापारी से वह सुराही खरीद ली।

इसके थोड़े दिन बाद श्रीगुप्त के घर काम करने के लिए माधव नामक एक युवक आ पहुँचा, जो गरीव था। चंद दिनों में ही वह अपने मालिक का विश्वास पात्र बन गया। श्रीगुप्त ने उसे अपनी समस्त अपूर्व वस्तुओं के साथ मरकत जड़ी वह अपूर्व सुराही भी दिखा दी। माधव ने बताया कि उन सारी वस्तुओं में वह सुराही बेजोड़ है।

प्रति दिन माधव श्रीगुप्त के साथ समीप में स्थित जंगल में सैर करने जाया करता था। एक दिन उसे प्यास लगी और वह पानी पीने के ख्याल से निकट के तालाब में गया। श्रीगुप्त अकेला रह गया था, तभी

उसे एक नारी का आर्तनाद यों सुनाई दिया—"मुझे बचाइये, मुझे बचाइये।" श्रीगुप्त उस आवाज़ की दिशा में आगे बढ़ा।

थोड़ी दूर जाने पर एक कुटी के सामने बेर की झाड़ी में फल तोड़ते हुए एक सुंदर युवती उसे दिखाई दी।

श्रीगुप्त ने उस युवती के निकट जाकर पूछा—"बहन, थोड़ी देर पहले किसी नारी ने अपने को बचाने के लिए चिल्लाकर कहा था, क्या तुम उसे जानती हो? क्या तुम ने उसे देखा है?"

युवती हँसकर बोली—"चिल्लाहट! मुझे तो सुनाई नहीं दी। शायद यह आप का भ्रम होगा!"

श्रीगुप्त लौट आ रहा था, तभी माधव उसकी खोज करते सामने आ पहुँचा। श्रीगुप्त ने माधव से पूछा–"माधव, बताओ, क्या तुम्हें किसी नारी का आर्तनाद सुनाई दिया?"

माधव ने कहा–"मुझे तो सुनाई नहीं दिया।" इस पर श्रीगुप्त को लगा कि वह पागल होता जा रहा है। इसके बाद दोनों घर लौट आये।

इसके दूसरे व तीसरे दिन भी श्रीगुप्त के अकेले रहते समय उसे एक नारी का आर्तनाद सुनाई दिया और वह पहले दिन की तरह उस कुटी के पास पहुँचा और युवती जवाब में हँस पड़ी।

श्रीगुप्त के मन में संदेह हुआ कि उसे सचमुच मति-भ्रमण तो नहीं हो गया है। या उस जंगल में कोई मन मोहनेवाली पिशाच तो नहीं है? उसने अपना संदेह माधव के सामने प्रकट किया, माधव भी आश्चर्य में आ गया।

इसके बाद श्रीगुप्त जंगल में सैर करने नहीं गया।

एक सप्ताह बाद जंगल में रहनेवाली युवती श्रीगुप्त को देखने आ पहुँची, नमस्कार करके बोली–"महाशय, मेरा नाम चारुमती है। मैं जंगल में अपने पिता के साथ उस कुटी में निवास करती हूँ। आप ने तो जिस दिन से उस ओर आना बंद किया, उस दिन से हर रात को एक नारी का स्वर "बचाइए, बचाइए!" सुनाई दे रहा है। बाहर जाकर देखती हूँ तो कोई दिखाई नहीं देता। रात को मैंने एक विचित्र सपना देखा। मेरी खाट के निकट कोई युवती रोती हुई खड़ी थी। उसके हाथ में मरकत जड़ी एक सुराही थी। वह कुछ बोले बिना उस सुराही को दिखाते हुए रो रही थी।"

ये बातें सुन श्रीगुप्त चौंक उठा। फिर भी उसने अपनी घबराहट को प्रकट किये बिना माधव को पुकारा। माधव श्रीगुप्त

के निकट आया, श्रीगुप्त का आदेश पाकर वह भीतर चला गया और मरकत जड़ी सुराही ले आया। उसे देखते ही चारुमती चिल्ला उठी–"उसने यही सुराही दिखाई थी! यही!"

तीनों ने जांच करके भलीभांति देखा कि कहीं उस सुराही पर मंत्र तो नहीं खुदे हैं, जिसके प्रभाव के कारण ऐसा होता हो! लेकिन उसके बाहर भीतर या नीचे भी कुछ दिखाई नहीं दिया।

माधव ने सलाह दी–"हम दोनों यह सुराही लेकर चारुमती की कुटी में जायेंगे, रात-भर जागकर इसके रहस्य का पता लगायेंगे।"

श्रीगुप्त ने अपनी सम्मति दी।

संध्या तक तीनों चारुमती की कुटी में पहुँचे, मरकत जड़ी सुराही को छोटी मेज पर रखा गया। चारुमती ने अपने अतिथियों को फल और दूध दिये। आधी रात के बीतते-बीतते श्रीगुप्त अपनी नींद को रोक न पाया, तब तक उसे चारुमती और माधव सोते हुए दिखाई दिये।

श्रीगुप्त ने जागकर देखा, धूप चढ़ आई थी, उसके चारों तरफ़ अनेक लोगों को देख वह विस्मय में आ गया। उसने देखा कि वहां पर माधव और चारुमती के अतिरिक्त, कई सिपाही, मरकतवाली सुराही का व्यापारी, इसके पूर्व उसे अपूर्व वस्तु बेचनेवाले दो व्यापारी, तीन और बुजुर्ग भी थे। उसने यह भी देखा कि

उसने इसके पूर्व जिन अपूर्व वस्तुओं का जो संग्रह किया है, उसमें से कई चीज़ें वहाँ पर मौजूद हैं। श्रीगुप्त की समझ में न आया कि वहाँ पर यह तमाशा क्या हो रहा है।

इस पर माधव ने श्रीगुप्त से कहा– "महाशय, आप के सामने यह साबित करने के लिए मुझे यह नाटक रचना पड़ा कि अपूर्व वस्तुओं का संग्रह करने की कामना का फल क्या-क्या होता है? मैं मगध राज्य के अधिकारियों में से एक हूँ। हमारे राज्य के अनेक धनी और पंडित अकसर आकर यह शिकायत करने लगे हैं कि उनके घरों से अपूर्व वस्तुओं की चोरी हो रही है। इसके साथ ही राजमहल की मरकत जड़ी सुराही भी गायब हो गई। इस पर मैंने तहक़ीक़ात शुरू की। इसी प्रयत्न में मैं आप के घर खुद नौकर बना, आप के शौक का परिशीलन किया। आप के शौक ने ही वास्तव में इन अपूर्व वस्तुओं को बेचनेवालों को इन बुजुर्गों के घरों से चोरी करने के लिए प्रेरित किया। आपने कभी इस बात का प्रयत्न नहीं किया कि ये लोग ये अपूर्व वस्तुएँ कहाँ से ला रहे हैं? और ये चीज़ें किनकी हैं? इस कारण ये लोग स्वेच्छा पूर्वक चोरियाँ करते आ रहे हैं।"

अधिकारी की बातें सुनने पर श्रीगुप्त दुखी हुआ, साथ ही उसे अपमान का अनुभव हुआ। फिर क्या था, उसने अपनी सारी अपूर्व वस्तुओं को माधव के हाथ सौंप दिया। माधव ने उनमें से चोरी की गई सारी वस्तुओं को उनके मालिकों को सौंप दिया, बाक़ी चीज़ों को सरकारी अजायब घर में प्रदर्शित करने का समुचित प्रबंध किया।

श्रीगुप्त ने भलीभांति समझ लिया कि शौक के कारण न केवल धन का नुक़सान हुआ, इसके अतिरिक्त कोई फ़ायदा न रहा। उस दिन से उसने अपने व्यापार में अधिक दिलचस्पी लेना प्रारंभ किया।

# सही सौदा

विजयनगर में एक धनी व्यापारी था। उसने अपने बाप-दादाओं के महल को गिराकर उसकी जगह एक सुंदर महल बनवाना चाहा। नये भवन की नींव डालने के लिए बढ़िया मुहूर्त निकट था, इसलिए इस बीच पुरानी इमारत को गिराने के लिए अनेक मजदूरों की जरूरत थी।

उन्हीं दिनों में राजा कृष्णदेवराय कहीं एक क़िला बनवा रहे थे, इस कारण नगर के सभी मजदूर वहाँ चले गये थे। इसलिए बड़ी मुश्किल से उसे दस ही मजदूर मिले। इमारत गिराने का काम मजदूरों को सौंपकर वह और मजदूर लाने चल पड़ा।

मजदूर, पुरानी इमारत को गिरा रहे थे, उन्हें जहाँ-तहाँ दीवारों में सोने व चाँदी के सिक्के हाथ लगे। इससे उन मजदूरों में उत्साह पैदा हो गया। वे दिन-रात काम करते सिक्कों की खोज करने लगे। इस प्रयत्न में चार-पाँच दिनों के अन्दर मजदूरों ने पुरानी इमारत को नींव के साथ खोद डाला और उस प्रदेश को एक दम साफ़ किया।

व्यापारी निराश हो यह कहते वापस लौट आया कि उसे एक भी मजदूर नहीं मिला है। मजदूरों ने भी सिक्कों के प्राप्त होने की बात व्यापारी से न कही और आपस में उन लोगों ने बराबर उन्हें बाँट लिया। व्यापारी को भी इस बात का कोई दुख न हुआ, क्योंकि उसी ने दीवारों में जहाँ-तहाँ सिक्के रखवा दिये थे जो दीवारें गिराने के लिए न्यायपूर्ण मजूरी थी।

# सोने का खजाना

पुराने जमाने की बात है। एक राजा के पास एकनाथ नामक एक अंतरंग सचिव था। वह बड़ा ही विश्वासपात्र था।

एक दिन एकनाथ अपने घर के पिछवाड़े में ऊबड़-खाबड़वाली ज़मीन को समतल बना रहा था, तभी उसे पुराने जमाने की सोने की हंडियां मिलीं।

एकनाथ हंडियों के ढक्कन खोल रहा था, तब उसकी पत्नी ने रोकते हुए कहा—"हमें कोई बढ़िया मुहूर्त देखकर उन हंडियों को खोलना है। नहीं तो उसके भीतर के सिक्के ठीकरों में बदल जायेंगे!"

एकनाथ ने कहा—"जमीन में चाहे जो भी चीज़ मिलती है, वह न्यायपूर्वक राजा की संपत्ति होती है।"

"हमारे घर के अन्दर जो चीज़ मिली है, वह राजा की कैसे हो सकती है?" पत्नी ने समझाया। पत्नी के साथ तर्क-वितर्क करना एकनाथ को अच्छा न लगा, उसने सोने के सिक्कों से भरी हंडियों को ले जाकर अटारी पर रख दिया।

पड़ोसी पुंडरीकाक्ष ने इस वाकया को देखा। उसने गांव के मुखिये के पास जाकर पूछा—"महाशय! मेरे मन में एक संदेह है, कृपया बताइये कि जमीन के भीतर जो संपत्ति मिलती है, वह न्यायपूर्वक किसकी हो सकती है?"

"धन चाहे जहां जिस किसी को भी प्राप्त हो, वह राजा का ही होता है। लेकिन यह बताओ कि तुम्हारे मन में इस वक्त यह संदेह क्यों पैदा हो गया है?" मुखिये ने पुंडरीकाक्ष से पूछा।

पुंडरीकाक्ष ने सारा वाकया मुखिये को कह सुनाया। तब मुखिये ने पूछा:

"सुनो, उन हंडियों को राजा के हाथ सौंप दे तो तुम्हारे और मेरे हाथ क्या

विनोद वर्मा

लगनेवाला है? तुम उन्हें चुराने में मेरी मदद करो और उसमें से आधा हिस्सा तुम ले लो। क्यों तुम्हें स्वीकार है?"

पुंडरीकाक्ष ने बड़ी प्रसन्नता के साथ मुखिये की शर्त को मान लिया और अपने घर चला गया।

उस गांव का मुखिया बड़ा ही दुष्ट और क्रूर स्वभाव का था। वह वीरक नामक एक गुंडे के द्वारा नाना प्रकार के अत्याचार कराता और गांव की जनता को थर्रा देता था, पर वह कभी प्रकट न होता था।

उस दिन रात को एकनाथ अपनी पत्नी के सोने के बाद धीरे से उठा, सिक्कों से भरी हंडियों को पिछवाड़े में ले गया, उनमें से सिक्के निकालकर एक वस्त्र में बांध लिया और हंडियों में ठीकरें भर दीं। इसके बाद उन्हें अन्दर लाकर अटारी पर रख दीं, सिक्कोंवाली गठरी को दूसरी जगह छिपाकर सो गया।

इधर मुखिये ने आधी रात के वक्त वीरक को बुला भेजा, उसे सारी बातें समझाकर पुंडरीकाक्ष के घर भेज दिया। पुंडरीकाक्ष की मदद से वीरक ने सिक्कोंवाली सारी हंडियों को चुराया। पुंडरीक अपने हिस्से की हंडी लेकर जब अपने घर की ओर जाने लगा, तब वीरक

ने पीछे से पुंडरीक के सर पर जोर से हंडी दे मारी, इस पर पुंडरीक बेहोश हो नीचे गिर पड़ा। वीरक ने उसके हाथ-पैर बांधकर पिछवाड़े में डाल दिया, यह योजना मुखिये ने ही बनाई थी।

इसके बाद वीरक सिक्कोंवाली हंडियां लेकर मुखिये के घर न गया, सीधे अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने सोचा कि इतनी सारी मेहनत करके सारा धन मुखिये के हाथ क्यों सौंप दे?

मगर आश्चर्य की बात यह थी कि जब वीरक अपने घर की ओर बढ़ा, तब अचानक उसके सिर पर लाठी की मार पड़ी और वह बेहोश हो गया। मुखिये

का विश्वास वीरक पर न था, इसलिए वह निकट ही ओट में छिपा हुआ था। मगर जब मुखिये को वीरक की चाल मालूम हो गई, तब उसने उसके सर पर लाठी चला दी, उसे पास की झाड़ी में खींच ले जाकर डाल दिया और हंडियां लेकर मुखिया अपने घर पहुंचा। ढक्कन खोलकर देखा, पर उनमें सोने के सिक्कों की जगह मिट्टी की ठीकरें भरी थीं।

सवेरा होते ही एकनाथ अपनी पत्नी की आँख बचाकर धन की गठरी ले राजा के पास गया, सोने के सिक्कोंवाली हंडियों का समाचार सुनाकर सारा धन राजा के सामने रख दिया। उसी समय पड़ोसी पुंडरीकाक्ष राजा से मुखिये की शिकायत करने आ पहुँचा।

राजा ने एकनाथ से पूछा–"एकनाथ! हंडियां कहां पर हैं।"

इसके उत्तर में पुंडरीकाक्ष ने कहा–"महाराज, हंडियां तो आप को मुखिये के घर मिल जायेंगी!" इन शब्दों के साथ उसने सारी कहानी सुनाई। उसके मन में मुखिये के प्रति क्रोध उबल रहा था, उसने यही सोचा कि उसे भले ही दण्ड मिले, कोई बात नहीं, पर मुखिये को अवश्य दण्ड मिलना चाहिए!

राजा एकनाथ की ईमानदारी पर बड़ा प्रसन्न हुआ और हंडियों में जो धन प्राप्त हुआ था, उसे एकनाथ को ही सौंप दिया। उसी वक़्त राजा ने अपने सिपाहियों को भेजकर गांव के मुखिये के घर की तलाशी करवाई, उन्हें वहां पर हंडियां मिल गईं, इस पर राजा ने उसे कठिन दण्ड सुनाया।

एकनाथ जब धन के साथ घर लौटा, तब उसकी पत्नी बोली–"अजी, सोने के सिक्कोंवाली हंडियों को कोई चुरा ले गये हैं।"

"हंडियां चुरा ले गये हैं तो कोई बात नहीं, उनमें जो धन था, वह हमारे पास सुरक्षित है।" इन शब्दों के साथ एकनाथ ने सारा धन अपनी पत्नी को दिखाया।

रामचन्द्रजी का आदेश पाकर वानर जंगल में पहुंचे, तरह तरह के पेड़ उखाड़ लाकर समुद्र में फेंकने लगे। बलवान वानर हाथी जैसे बड़े बड़े पत्थर उठा लाकर समुद्र में गिराने लगे, जिससे समुद्र का पानी उछलकर आसमान को छूने लगा। इस तरह सारे समुद्र में हलचल मच गई।

सेतु का जब निर्माण होने लगा, तब उसके ऊबड़-खाबड़ होने से बचाने के लिए कुछ लोगों ने रस्सों के सहारे समतल बनाये रखने का प्रयास किया, तो कुछ लोगों ने मापों का प्रयोग किया। नल ने सेतु की जो योजना बनाई उसकी लंबाई सौ योजन तथा चौड़ाई दस योजन की थी। प्रति दिन बीस योजन के हिसाब से पांच दिनों के अंदर सेतु का निर्माण समाप्त हो गया।

राजपथ की भांति तैयार हुए उस सेतु से होकर वानर सेनाओं ने समुद्र को पार किया। शत्रु सेना के आक्रमण करने पर उनका संहार करने के हेतु विभीषण अपने चार अनुचरों के साथ खड़ा हो गया।

सेतु को पार करते समय हनुमान पर रामचन्द्र तथा अंगद पर लक्ष्मण सवार हुए। वे पैदल ही सेतु को पार करना चाहते थे, किंतु ऐसा करना सुग्रीव को पसंद न था। हनुमान तथा अंगद ने भी आकाश पथ पर चलकर राम और लक्ष्मण को उस पार पहुंचा दिया। कुछ अन्य

२१. वानर सेना का लंका में प्रवेश

उत्साह प्रदर्शित कर रहे थे, उसे देख रामचन्द्रजी अत्यंत प्रसन्न हुए।

वानर सेना ने जब लंका नगर के बाहर डेरा डाला, तब नगर में से मृदंगों, भेरियों तथा राक्षसों के कोलाहल की ध्वनियाँ सुनाई दीं। इससे वानर कुपित हुए और भीषण रूप से सिंहनाद करने लगे।

रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से कहा– "लक्ष्मण, त्रिकूट पर्वत पर आकाश का स्पर्श करने लायक़ विश्वकर्मा द्वारा निर्मित उस लंका नगर को तो देखो!"

इसके बाद वानर सेना के व्यूह का परिचय दिया–अंगद नील के साथ अपनी सेना को व्यूह के मध्य भाग में रखे। ऋषभ तथा उसकी सेना दायीं ओर रहेगी। गंधमादन अपनी सेना समेत बाईं दिशा में रहेगा। रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण व्यूह के अग्र भाग में रहेंगे। सुग्रीव वानर सेनाओं के पीछे रहेगा। संपूर्ण वानर सेना को गरुड़ व्यूह में खड़ा किया गया।

वानर सेना लंका नगर को तहस-नहस करने की उत्कट अभिलाषा रखती थी।

रामचन्द्रजी ने सुग्रीव से कहा–"सुग्रीव, तुम रावण के दूत शुक को मुक्त कर दो।"

वानरों के हाथों में नाना प्रकार की यातनाएँ भोगने जाने के डर से छटपटाने वाला शुक सुग्रीव के हाथों से मुक्त होने

वानर भी हवा में उड़ते हुए उस पार पहुँचे। वानरों की संख्या अधिक थी, इसलिए उस भीड़-भक्कड़ में कुछ लोग समुद्र में गिर पड़े और फिर तैरकर ऊपर आ पहुँचे। सेतु को पार करते वक़्त वानरों ने जो कोलाहल किया, उसकी वजह से समुद्र का घोष भी उन्हें सुनाई न दिया।

समुद्र के उस पार फलवृक्षों से भरे अरण्य तथा वानर सेना के ठहरने के लिए अनुकूल कई प्रदेश थे। लेकिन रामचन्द्र ने तत्काल वानर सेना को लंका नगर की ओर बढ़ाने का निर्णय किया। रामचन्द्रजी आगे चलते रहे और वानर उनके पीछे सिंहनाद करते अपनी पूँछ हिलाते हुए जो

ही रावण के पास भाग खड़ा हुआ। रावण शुक को देख मुस्कुराते हुए बोला–"शुक, तुम ऐसे दिखाई देते हो मानो तुम्हारे पंख कट गये हैं, कहीं वानरों के हाथों में तो नहीं पड़ गये?"

शुक ने रावण से यों कहा–"मैं समुद्र के उस पार उड़कर चला गया। सुग्रीव को आप का संदेशा हूबहू सुनाया। इस पर वानर सब क्रोध में आ गये। मुझे पकड़कर नाना प्रकार की यातनाएं दीं। वे वानर भी बड़े ही विचित्र हैं; वे बात तक नहीं सुनते। उनके मुंह से मैं उत्तर कैसे पाऊं? वे एक दम क्रोधी और क्रूर स्वभाव के हैं, रामचन्द्रजी ने समुद्र पर सेतु बंधवाया, समुद्र को पार कर वे वानर सेनाओं के साथ लंका-द्वार तक पहुंच गये हैं। असंख्य भालू और वानरों की सेना चारों तरफ़ फैली हुई है। अब वानर तथा राक्षसों के बीच युद्ध अनिवार्य है। वानर किसी भी क्षण लंका की चहारदीवारी को लांघ सकते हैं। इसलिए आप चाहें तो सीताजी को रामचन्द्रजी के हाथ सौंप दीजिए, अथवा उनके साथ युद्ध कीजिए, मगर विलंब होना नहीं चाहिए।"

ये बातें सुनने पर रावण की आंखें क्रोध के मारे लाल हो उठीं। उसने कहा–"चाहे सारे लोक एक साथ मुझ पर आक्रमण करें तब भी मैं सीताजी को नहीं सौंपूंगा! अनेक दिनों से युद्ध के अभाव में मेरी भुजाएं फड़क रही हैं। रामचन्द्र मेरे
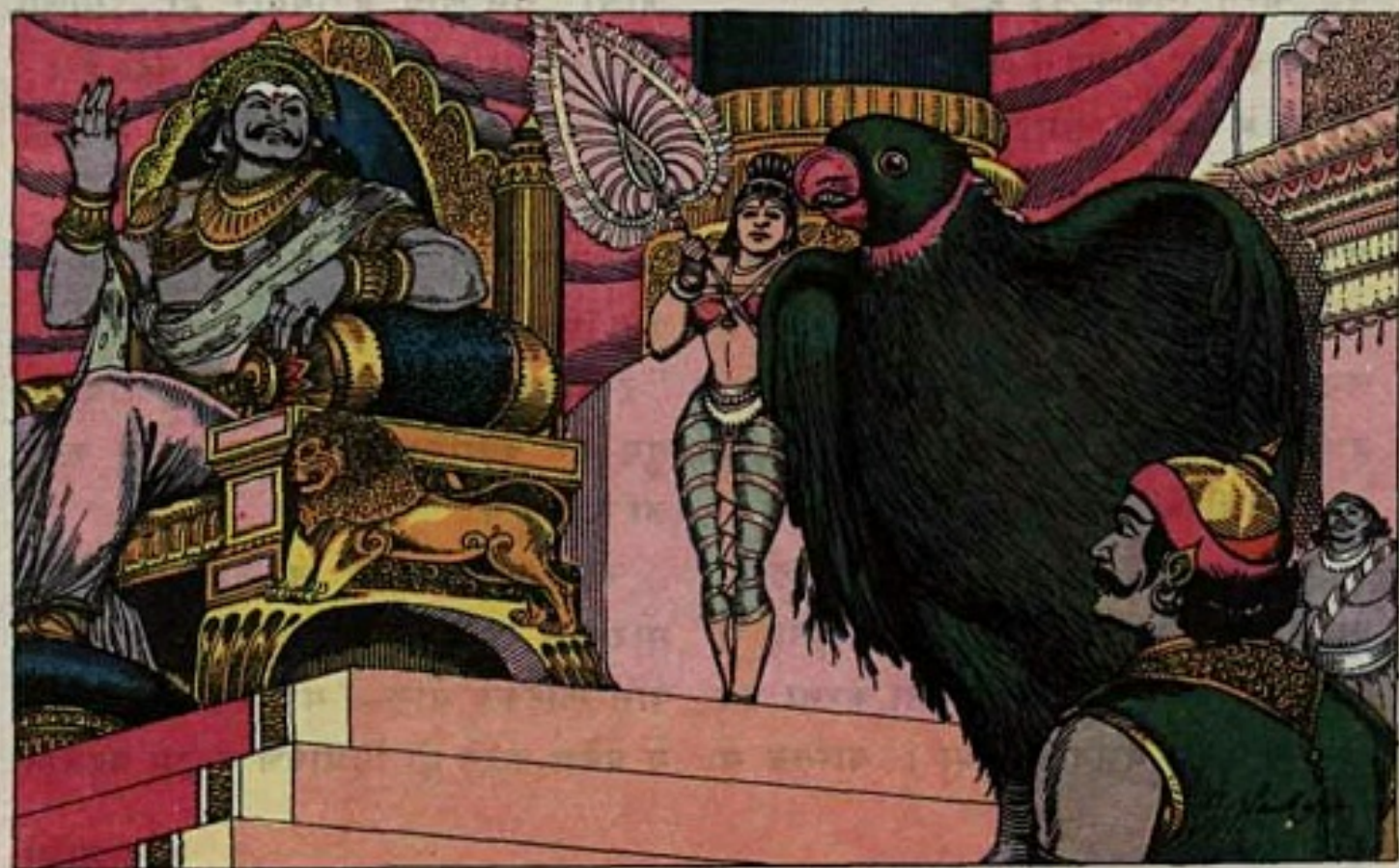
प्रताप से अनभिज्ञ हैं, इसलिए मेरे साथ युद्ध करने निकल पड़े हैं।"

इसके बाद रावण ने अपने मंत्री शुक तथा सारण से कहा—"समुद्र पर सेतु बाँधने की बात विश्वसनीय नहीं है। इस बात पर मैं यक़ीन नहीं कर सकता। इसलिए तुम लोग गुप्त रूप से जाकर इन बातों का पता लगा लाओ कि वास्तव में सेतु का निर्माण हुआ है या नहीं? वानर सेना कितनी है? रामचन्द्रजी के अस्त्र-शस्त्र क्या है?"

रावण का आदेश पाकर वे दोनों वानरों का रूप धरकर वानर सेना में पहुँचे। वानर सेना की गिनती करना उन दोनों के लिए संभव न हुआ। वास्तव में वानर सेना न केवल सारे प्रदेशों पर फैली हुई थी, बल्कि थोड़ी और सेना सेतु को पार कर रही थी। इस बीच विभीषण ने उन दोनों को पहचान लिया। उन्हें बन्दी बनाकर रामचन्द्रजी से बोला—"महानुभाव, ये दोनों शुक और सारण नामक राक्षस हैं और रावण के मंत्री हैं। वानरों के रूप में हमारे भेद जानने के लिए लंका से आये हुए हैं।"

इस पर उन दोनों ने रामचन्द्रजी को प्रणाम किया और बताया कि विभीषण का कहना सत्य है। तब रामचन्द्रजी ने कहा—"तुम दोनों हमारी सारी सेना को अच्छी तरह से देख लो, तब लंका को लौट जाओ! तुम लोग बेहथियार हो, इसलिए तुम्हारा वध करना न्याय संगत नहीं है।" इन शब्दों के साथ रामचन्द्रजी ने उन्हें प्राणों के साथ वापस भेजा।

रामचन्द्रजी ने उनके द्वारा रावण के पास एक संदेशा भी भेजा, वह यह था—"हे रावण! मैं कल सवेरे अपने क्रोध को तुम पर वज्रायुध के रूप में प्रयोग करने जा रहा हूँ।"

यह संदेशा सुनने के बाद शुक और सारण ने रामचन्द्र की जय की! रावण के पास लौटकर बोले—"सम्राट! वानर सेना में प्रवेश करते ही विभीषण ने हमें पहचान

लिया और रामचन्द्रजी के हाथ सौंप दिया। रामचन्द्रजी ने हम पर कृपा करके हमें मुक्त किया। वानर सेना की मदद के लिए रामचन्द्रजी, लक्ष्मण, विभीषण और सुग्रीव तैयार हैं। उन्हें और चाहिए ही क्या? रामचन्द्रजी के बाणों को देखने पर लगता है कि उन्हें किसी और की सहायता की आवश्यकता नहीं है। वानर सेना समुद्र पार कर हमारे राज्य में प्रवेश कर चुकी है। वह इतनी दूर तक फैली हुई है कि उसका वर्णन करना नामुमकिन है। वानरों से युद्ध करने की बात छोड़कर सीताजी को रामचन्द्र के हाथ सौंप दीजिए।"

रावण ने सारण से कहा—"मैं कदापि सीताजी को सौंप नहीं सकता। तुम शांत स्वभाव के हो, शूर नहीं हो! वानर सेना को देख घबरा गये हो! युद्ध में मुझे कोई भी व्यक्ति पराजित नहीं कर सकता।"

इसके बाद रावण के मन में भी वानर सेना को देखने की इच्छा हुई। वह अपने महल के ऊपर पहुँचा। उसने देखा कि लंका नगर के चारों तरफ़ के पर्वत और जंगल भी वानरों से भरे हुए हैं। तब अपने समीप में स्थित मंत्री सारण से बोला—"इस सेना में शूर-वीर, बलवान तथा मुख्यतः युद्ध में लड़नेवाले कौन कौन हैं? उनके मुख्य सेनापति कौन हैं? सुग्रीव के सलाहकार कौन कौन हैं?"

इसके उत्तर में सारण ने यों कहा :

वानर वीरों तथा अन्य वानर सेनापतियों के बारे में भी विस्तार पूर्वक समझाया। इसके उपरांत उसने प्रमुख भल्लूक वीरों का परिचय देते हुए कहा कि उनमें सब से बड़ा वीर जांबवान है।

मारण ने जिन लोगों का परिचय न कराया, उनके विवरण शुक ने रावण को दिये। उसीने हनुमान के समीप में स्थित श्रीरामचन्द्र तथा लक्ष्मण को भी रावण को दिखाया। रावण ने राम के समीप में स्थित अपने छोटे भाई विभीषण को भी देखा। पल भर के लिए उसके भीतर भय उत्पन्न हुआ, पर तत्काल ही वह क्रोध में परिणत हुआ। शुक और सारण ने शत्रुओं के शौर्य एवं पराक्रम को बढ़ा-चढ़ाकर कहा था, इस पर उन्हें डांटकर बोला–"तुम्हारे जैसे मंत्रियों को नियुक्त करने के एवज में मुझे कभी का मरना था। इसके पूर्व तुम लोगों ने मेरा उपकार किया था, इस कारण तुम लोगों का वध किये बिना छोड़ रहा हूं! तुम लोग यहां से चले जाओ।" इस पर वे दोनों रावण की जयकार करते वहां से चले गये।

इसके बाद रावण ने महोदर के द्वारा थोड़े गुप्तचरों को बुलवाकर उन्हें आदेश दिया–"तुम लोग रामचन्द्र को पहचानकर उनके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करो।"

"नील वानर सेना का प्रमुख नेता है। अंगद वानर राज्य का युवराजा है और वाली का पुत्र है। हम लोग वाली जैसे प्रतापी हनुमान से इसके पूर्व ही परिचित हो चुके हैं। सेतु का निर्माण करनेवाला नल अत्यंत पराक्रमी है। उसके अधीन में रहनेवाली वानर सेना अजेय है! वह सफ़ेद वानर श्वेत नामक वीर है। युद्ध करने में वह अत्यंत दक्ष एवं भयंकर है। लाल व पीले केशोंवाली पूंछवाला व्यक्ति कुमुद है। वह अत्यंत क्रूर है, वह युद्ध करने के लिए अत्यंत उत्सुक है।"

इसी संदर्भ में सारण ने रावण को रंभ, शरभ, पनस, विनत, क्रोधन, गवय नामक

गुप्तचर अपने वेश बदलकर सुवेल पर्वत के पास स्थित राम, लक्ष्मण, विभीषण तथा सुग्रीव के निकट पहुँचे। राम, लक्ष्मण तथा विशाल वानर सेना को देखते ही उनके कलेजे काँप उठे। तिस पर विभीषण ने उन्हें पहचान करके बन्दी बनाया। उन गुप्तचरों में शार्दूल नामक राक्षस बड़ा ही दुष्ट था। इसलिए विभीषण ने उसे वानरों के हाथ सौंप दिया। वानर उसका वध करने ही जा रहे थे, तब रामचन्द्रजी ने उन्हें रोककर शार्दूल के साथ अन्य गुप्तचरों को भी मुक्त कराया। वे पिटकर प्राणों के साथ बचकर लंका को लौट गये।

शार्दूल को देखते ही रावण ने भाँप लिया कि कोई अघटित घटना हो गई है। उसने रावण से कहा—"महाराज, वानरों का परिचय प्राप्त कर लेना कोई सरल कार्य नहीं है। मैं विभीषण के अनुचरों के द्वारा पकड़ा गया। इस पर वानरों ने मुझे अनेक प्रकार से सताये। रामचन्द्रजी ने मुझे वानरों के हाथों में मरने से बचाया। मेरी किस्मत बली थी, इसलिए बच निकला। रामचन्द्रजी लंका पर हमला करने के लिए तैयार बैठे हैं। अब हमारे सामने केवल दो ही रास्ते हैं—या तो सीताजी को रामचन्द्रजी के हाथ सौंप दें या युद्ध करें।"

रावण ने पुनः बताया कि वह किसी भी मूल्य पर सीताजी को सौंपने के लिए तैयार नहीं है। उसने वानर प्रमुखों के बारे में शार्दूल के मुँह से भी विवरण जान लिया।

इसके बाद वह विद्युज्जिह्व नामक राक्षस को साथ ले सीताजी के निकट पहुँचा और विद्युज्जिह्व से बोला—"तुम अपनी माया के द्वारा रामचन्द्रजी के सर की सृष्टि करो। उसके साथ एक बहुत बड़ा धनुष तथा बाण तैयार करो। उनके द्वारा हम सीताजी को धोखा दे सकते हैं।"

विद्युज्जिह्व ने रावण की बात मान ली। रावण ने अपना एक अमूल्य आभूषण उसे पुरस्कार के रूप में दिया।

वसेत् सह सपत्नेन क्रुद्धनाशीविषेणवा
न तु मित्र प्रवादेन संवसेत् शत्रु से विना ॥ १ ॥

[ शत्रु तथा जहरीली सर्पों के साथ भी मित्रता की जा सकती है, पर मित्र का अभिनय करते शत्रु के पक्ष में रहनेवाले के साथ मैत्री नहीं करनी चाहिए । ]

नित्य मन्योन्य सहृष्टा, व्यसने स्वाततायिन:
प्रच्छन्न हृदया घोरा ज्ञात यस्तु भयावहा: ॥ २ ॥

[ सदा सर्वदा अपार प्रेम प्रकटते हुए हृदय की बातों को जो ज्ञानी प्रकट नहीं करते, उनसे हमेशा खतरा बना रहता है । ]

"नाग्नि नान्यानि शस्त्राणि, न न:पाशा भयावहा:
घोरा: स्वार्थ प्रयुक्ता स्तु ज्ञातयो नो भयावहा:
उपाय मेते पश्यंति ग्रहणे, नात्र संशय:
कृत्स्ना द्भूयात् ज्ञातिभयम् सुकष्टम् विदितम् वच: ॥ ३ ॥

[ जंगल के हाथी परस्पर मिलने पर आपस में यों कहा करते हैं–"हमें आग, हथियारों तथा रस्सों से उतना डर नहीं है, वास्तव में हमारा डर तो अपनी ही जाति के लोगों से है, वे ही हमें बंदी बनाने में मनुष्यों की मदद देते हैं । अग्नि के भय से भी बढ़कर ज्ञातियों का भय डरावना होता है ।" ]

Photo by Pranlal K. Patel
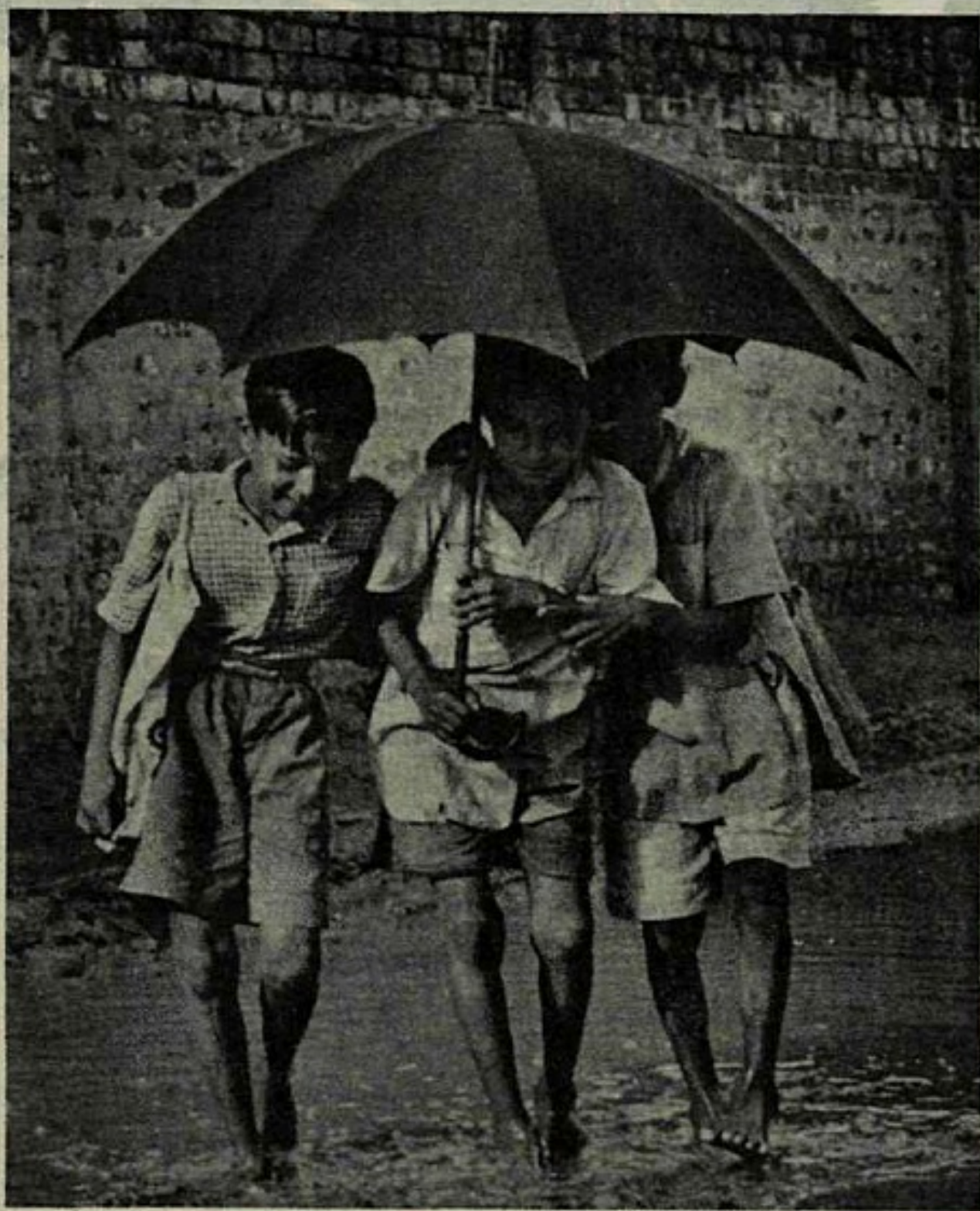
पुरस्कृत परिचयोक्ति

रिमझिम बरस रहा है पानी!

प्रेषक : मनोजकुमार श्रीवास्तव

Photo by M. Viswanath

७८०, गुमाइपुरा,
झांसी
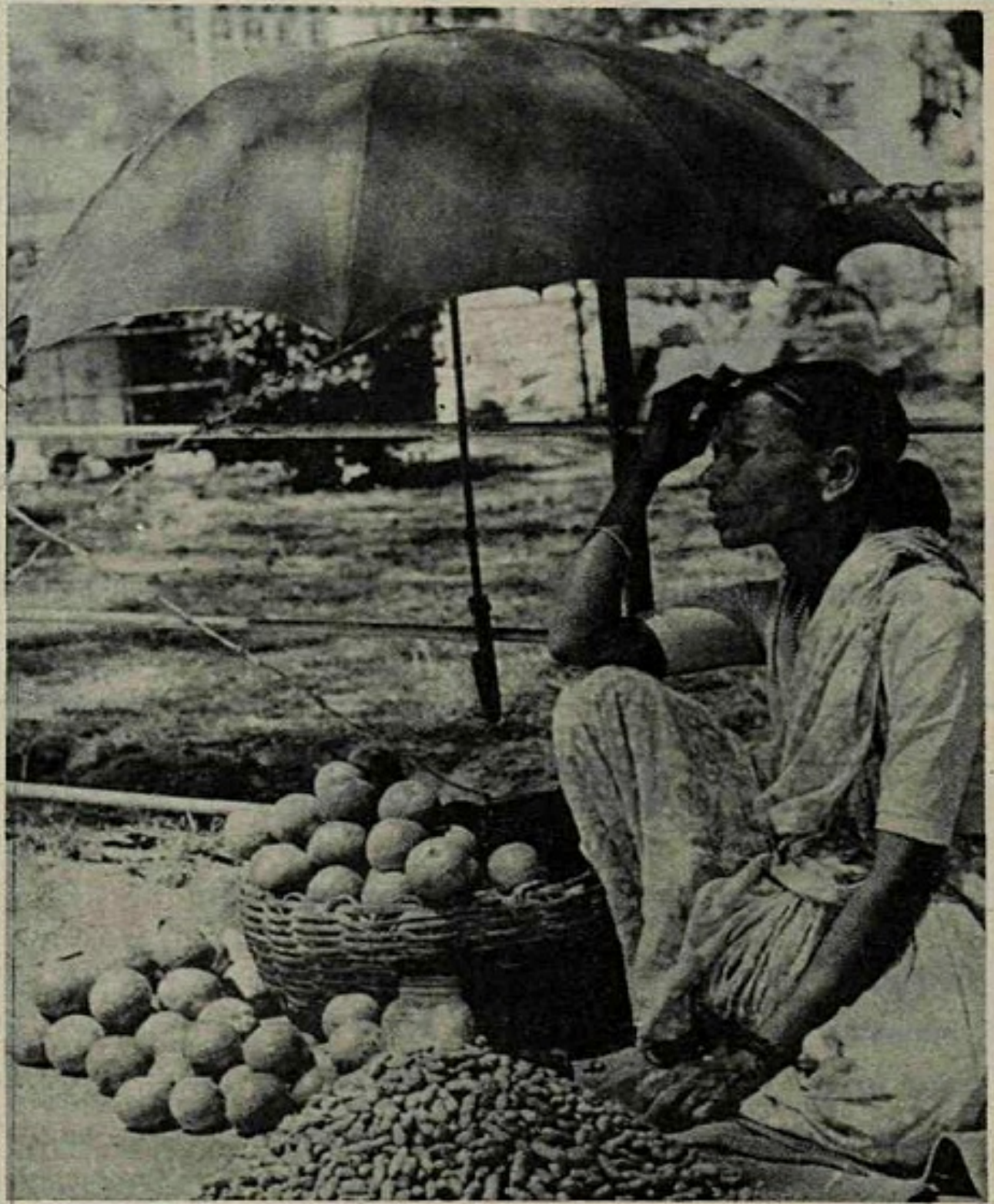
ताक लगाये बैठी है नानी !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २० )

★ परिचयोक्तियाँ जुलाई १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर के अंक में प्रकाशित की जायेंगी !

# चन्दामामा

## इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य




Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras 600 026 : Controlling Editor : NAGI REDDI

# चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

**डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६**

# सफलता के दस वर्ष

## राष्ट्र की प्रगति के कदम

## एक विकासशील आत्म-निर्भर अर्थव्यवस्था की ओर

खाद्यान्न की अभूतपूर्व पैदावार — 11.4 करोड़ मी. टन
औद्योगिक उत्पादन में 30 प्रतिशत वृद्धि ,
बिजली उत्पादन में 100 प्रतिशत वृद्धि ,
एक ही वर्ष में निर्यात रु० 3,300 करोड़ से अधिक ,

## अनुशासित जीवन की ओर

समय की पाबन्दी और कुशलता में सुधार ,
सभी ओर भरपूर प्रयास और चमत्कारी परिणाम ,
समाज के सभी वर्गों में शान्ति और सौमनस्य,

## और अधिकाधिक एकता की ओर

*"लगभग हर साल कोई न कोई चुनौती और संकट सामने आया ....*
*हमें विदेशी हमले से अपने देश की रक्षा करनी पड़ी ....*
*क्षेत्रीय तनावों को प्रेमभाव और मेल जोल से कम किया गया ,*
*हमने निजी उद्यम को समाप्त किए बिना सरकार द्वारा शुरू किए गए विकास का*
*एक बड़ा कार्यक्रम हाथ में लिया है ।"*

— इन्दिरा गांधी

CHANDAMAMA (Hindi) JULY 1976 Regd. No. M. 5452

मित्र-संप्राप्ति